डाक पंजीयन संख्या: एडी. ३०६/२००३-०५
R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

वर्ष 4, अंक 9, इलाहाबाद सितम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक पत्रिका

मूल्य 3 रुपये

बिजली की समस्या धीरे विकराल रूप धारण कर रही है

अटलजी को अब संन्यास ले लेने चाहिए

डाक पंजीयन संख्या: एडी.३०६/२००३-०५ R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

साहित्य श्री व समाज श्री ०५ हेतु प्रविष्टियॉ आमंत्रित है

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"** ने जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से गत वर्ष की भॅाति इस वर्ष भी साहित्यकारों, पत्रकारों व समाज सेवियों को प्रोत्साहित करने हेतु साहित्य श्री, समाज श्री व पत्रकार श्री सम्मान से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसमें ५००१/-रुपये का नगद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र तथा १० अन्य रचनाकारों अन्य सम्मानों से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसके अलावा शिक्षा क्षेत्र कें के लिए **स्व० ओकारनाथ दूबे स्मृति सम्मान** व पुलिस सेवा के लिए **स्व० केदार नाथ दूबे स्मृति सम्मान** प्रदान किएं जाएगें. यदि कोई अन्य सम्मानीय व्यक्ति अपने ंसस्थान या व्यक्ति विशेष के नाम पर पुरस्कार देना चाहते हैं तो कृपया नीचे लिखे पते पर लिखे

ंइसमें रचनाकारों को फोटो परिचय सहित पॅाच रचनाऍ (गद्य/पद्य/नाटक/कहॅानी में से एक विधा पर आधारित) मौलिकता के प्रमाण-पत्र के साथ भेजना होगां तथा समाज सेवियें व पत्रकारों को छाया परिचय सहित समाज सेवा में पॅाच वर्षो में किये गये योगदान की विस्तृत रिर्पोट सहित प्रविष्टियॅा **१५ दिसम्बर २००५** तक आमंत्रित हैं. प्रवेशियों को स्टेशनरी, डाकव्यय सहित १००रुपये प्रवेश शुल्क अपेक्षित है. शुल्क मनिआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट 'विश्व स्नेह समाज' के नाम से देय होगा. प्रविष्टि अपनी प्रविष्टिया **हमें निम्न पते पर भेजें:-**

नोटः 1. 15 दिसम्बर 05 के बाद प्रविष्ट्रियों पर विचार नही किया जाएगा.
2. समारोह सम्मान 4/5 फरवरी 2006 को इलाहाबाद में लगने वाले अद्धकुम्भ में प्रदान किये जाएंगे.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सम्पादक, मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
मो0 9335155949

दाउजी का है कहना, हर अनाथ व वृद्ध है मेरा अपना

स्व0 महेन्द्र प्रताप सिंह *पुस्तकालय*

स्नेहालय
(अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम)

सूचना और सहयोग आपका, परवरिश हमारी

अगर आपकी नजर में कोई अनाथ १८ वर्ष से कम उम्र का दिखाई पड़ जाए, कोई वृद्ध/वृद्धा जिसका कोई सहारा न हो मिले कृपया हमें नीचे दिये पते पर सूचित करें आपका छोटा सहयोग, आपका छोटा सा पैसा, कर सकता है आपके किसी भाई-बहन, बुर्जूग की सेवा

मैं एक बच्चे की पढ़ाई के लिए/असहाय की सेवा के लिए/विधवा के लिए/ बृद्ध के लिए रु० ३०/-प्रति माह (रु० ३६०/-वार्षिक) जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से भेंज रहा हुं.

नाम : ....पिता का नामः ....व्यवसायः..............................
पताः...मैं एक बच्चे की पढ़ाई/असहाय की सेवा/विधवा/बृद्ध के लिए रुपये ....(शब्दों में)..मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट भेज रहा हुं.

निर्माणाधीन स्थलः
ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ०प्र० में

पंजीकृत कार्यालयः
सचिव, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद मो0 9335155949

नोटः कृपया चेक/ड्राफ्ट जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से ही काटे, सहयोग राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें

वर्ष 4, अंक 9, इलाहाबाद जुलाई 2005

विश्व स्नेह समाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

इलाहाबाद में पहला अद्वितीय साहित्य मेला आयोजित

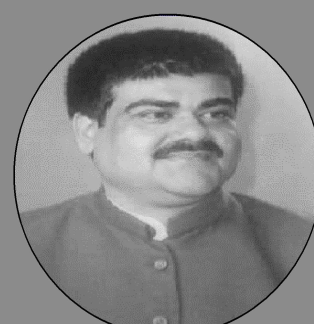

उदियमान व ऊर्जावान

विधायक उदयभान करवरिया

देवरिया महोत्सव ०५ में बोलते सांसद मोहन सिंह

मुस्लिम दलितों को भी दिया जाना चाहिए अनुसूचित जाति का आरक्षण

मूल्य **3** रुपये

RANCHI COLLEGE OF PHARMACY

(Approved by Pharmacy Council of India)

Prem Nagar, Hesag (Near Hatia Rly. Stn.) P.O. Hatia, Ranchi-3

Phone No:- (0651)2290644, 2290510, MO: 3338800

Few Seats are Vacant in Mgt. Quota

DIPLOMA IN PHARMACY

Course Duration: 2 Yrs, Elegibility : 10+2/ I.Sc. (MATH BIOLOGY)

SPECIAL FEATURE

- Premier Institute of Pharmacy in Bihar & Jharkhand
- Own Palatial- Building
- A library with stock of books
- Excellent Lab with Latest Equipments
- Excellent Facuity
- 24 hrs. Electricity facilities
- Salubrious environment for study

Application Form and Prospectus can be had on payement of Rs. 125/- by cash or Rs. 150/- by sending MO/DD/IPO in favour of **"RANCHI COLLEGE OF PHARMACY, RANCHI."**

Separate Hostel for Boys & Girls

साहित्य मेला 05 की सफलता की कॉमना के साथ

यहां पर लोगों
डालना है।

खाओं दिल खोल के
बिस्कुट अनमोल के

सुपर स्टाकिस्टः

बाबूजी इण्टर प्राइजेज

185/20, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

0532–2414734, 9415254264, 9935595721

Manufactors:

Anmol Bakers Pvt. Ltd., Office: B-2 & 3, Sector-16, Noida, U.P

विश्व राष्ट्रीय हिन्दी मासिक
स्नेह समाज
वर्ष : 4, अंक : 09 जुलाई 2005

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
कार्य. संपादकः
डॉ0 कुसुमलता मिश्रा
साहित्य संपादक
डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय
विज्ञापन प्रबंधक/प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला
उप संपादक
रजनीश कुमार तिवारी
सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी
ब्युरो प्रमुख/ गिरिराजजी दूबे

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय,
मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११
मो०: ६३३५१५५६४६

इस अंक में

१. कहीं भारत में लोकतंत्र की हत्या तो नहीं हो गई है ५
२. मुस्लिम दलितों को भी दिया जाना चाहिए आरक्षण ६
३. विदेशी कल्चर के कहर से खुद को बचाएं ७
४.उदियमान व उर्जावान विधायक, ई० उदयभान करवरिया ८
५. चक्कर एडमिशन का ६
६. देवरिया महोत्सव एक रिर्पोट १०
७. कहॉनी १२, २३
८. साहित्य मेला २००५ १४
६. इस्लाम और औरत २०
१०. कैसा रहेगा शनि साढ़े साती के दौर में ३२
११. समीक्षा ३४

आपके विचार स्नेह के साथ

राज्यपाल का पद महत्वहीन होता जा रहा है

दिसम्बर०४ कं अंक में सम्पादकीय में वर्णित आपके विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूँ. राज्यपाल का पद महत्वहीन होता जा रहा था. इस पद की गरिमा को बहाल करना आवश्यक था. इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय का फैसला सचमुच स्वागत योग्य हैं. राजेन्द्र चड्ढ़ा का आलेख विचारणीय हैं. राजनीतिक दलां की निज स्वार्थ का त्याग कर राष्ट्रहित में इस मुद्दे पर कोई ठोस कदम उठाना चाहिए. एस. पी.भारतीय का आलेख 'मछली पालन' रोजी-रोटी का सरल साधन हैं. बेरोजगाार युवको के लिए उपयोगी सिद्ध होगा. श्रीमती मोना द्विवेदी का आलेख 'गर्भ निरोध ा के कुछ उपाय' परिवार नियोजन के लिए उपयोगी सिद्ध होगा. इम्तियाज अहमद गाजी का आलेख 'जहॉ फुटपाथ ही बिछौना हैं' समाज में व्याप्त विसंगतियों का स्पष्ट चित्रण हैं. शैलेन्द्र पांडेय का आलेख 'प्राथमिक शिक्षा के नाम पर फर्ज आदायगी सच का आईना हैं, विचारणीय हैं. श्री नयन शास्त्री का आलेख 'मोहब्बत में जब कदम लड़खड़ाएं..... शराबियों के लिए उपयोगी साबित होगी. डॉ. वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', नलिनीकांत, डॉ० गौरी शंकर श्रीवास्तव 'पथिक' भगवान दास जैन की काव्य रचनाएं, घनश्याम अग्रवाल सुरेश शर्मा, रामचरण यादव का व्यंग्य भी पंसद आयें. आशा हैं स्वस्थ और सांनद होगें.

अभय कुमार ओझा, लेखा सहायक, व्यवहार न्यायालय, खगड़िया, बिहार

अपनी बात शायद सबकी बात है

पत्रिका का अंक मिला, प्रसन्नता हुई. बड़ा कठिन कार्य चुना हैं. ईश्वर शान्ति व साधन दें. अपनी बात शायद सबकी बात है. अतः आप साधुवाद के पात्र हैं. मंथन का सच भी द्रष्टव्य हैं. सामयिक राजनीति प्रायः बहरी और अंधी रहती हैं. उसका ध्यान मोड़ने के लिए बम-विस्फोट चाहिए. भले ही वह वीर भगतसिंह की तरह हों. मैं भी विश्व मानव मंच द्वारा विश्व स्नेह का पथ प्रशस्त करता हूँ. अमेरिका के कुछ देशों मे जाकर सत्य प्रेम और क्षमतामूलक न्याय पर चर्चायें की हैं. आपकी सामग्री भी उपयुक्त हैं. शुभकामनओं सहित

डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी, कांति कुटीर, गांधी नगर, कानपुर देहात,

इतने कम मूल्य में इतनी उम्दा पत्रिका

आपके द्वारा कृपा पूर्वक प्रेषित विश्व स्नेह समाज प्राप्त हुआ. पत्रिका में साहित्य, समाज, राजनीति, स्वास्थ्य, ज्योतिष इत्यादि विविध विषयों को समाहित करने के साथ-साथ इसके माध्यम से आप राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो निःस्वार्थ भावना से सेवा कर रहे हैं. उसके निमित्त आप बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं. इतने कम मूल्य में इतनी उम्दा पत्रिका निकालना वास्तव में अपने आप में एक सराहनीय कार्य हैं. पढ़कर आनन्ति हुआ.

पढ़ी पत्रिका आपकी, मिला बड़ा आनन्द
मानो नासिर मिल गया,नवल सुमन मकरन्द

डॉ0 मिर्जा हसनस नासिर, वैजनाथ रोड, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

हो सके तो इसकी समीक्षा भी छापने की कृपा करें.

मुझे विश्व स्नेह समाज से एक पत्र मिला था, जिसका गत १४ जनवरी को ही

प्रत्युत्तर प्रेषित कर दिया था. अब आपके कार्यालय से मुझे मेरा पूर्व प्रेषित चेक वापस मिल गया हैं. मैंने एमओं भेज दिया हैं.

मैंने खुली डाक से जनवरी के प्रथम सप्ताह में ही अपना सद्यः प्रकाशित मुक्तक संग्रह 'त्रिगन्धा' भी आपके पास भेजा था, हो सके तो इसकी समीक्षा भी छापने की कृपा करें.

डॉ0 कृष्ण मुरारी शर्मा
31, माधव नगर, झांसी रोड, ग्वालियर

निरन्तरता बनीं रहे यही कामना

विश्व स्नेह समाज का पत्रकारिता एंव जनसंचार विशेषांक प्राप्त हुआ. अभार। लघु पत्र-पत्रिकाएं अपना बहुमूल्य योगदान कर रही हैं. आपका प्रयास भी सराहनीय हैं. पत्रकारिता के प्रकार व योगदान पर आपे अच्छी सामग्री दी हैं.परन्तु पत्रकारिता पर खतरे और पत्रकारिता के खतरे जैसे विषय अछूते रह गए हैं. आप परिश्रम कर रहे हैं इस हेतु आपको बधाई. निरन्तरता बनीं रहे यही कामना है. डॉ0 वेद 'व्यथित'
अध्यक्ष, भारतीय साहित्कार संघ, बल्लभमठ,

नारी नग्नता का दिखावा बुरा लगा

विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ. प्रबंध संपादिका नारी के होते फिल्मी सामग्री की आड़ में नारी नग्नता का दिखावा पाठकों को बुरा लगा. अपनी बात पढ़ी. स्वच्छ शासन का अभी बीज नाश नहीं हुआ. राज्यपाल महोदय बधाइ के पात्र हैं. मंत्री परिषद को धिक्कार हैं. मंथन के चडढा साहिब, यह बंगला देशी आग हमारे ही शासकों की लगाई हुई हैं. पसारवादी नीतियों को कड़वे फल ही लगते हैं. वीरप्पन की दहशत कें जिम्मेदार राज्य सरकारों के नेता मंत्री हैं जो उससे भारी धन लेकर मालमाल होते रहें. साहित्य व समाज श्री को कृपया व्यापार का अड्डा न बनायें. हिन्दी प्रचार के नाम से यह रोग सारे देश में फैल रहा हैं. श्री राजेश कुमार सिंह जी के बारे मे जानकर पाठकों को गर्व हुआ. जनाब गाजी साहिब का लेख भ्रष्ट भारतीय गणतंत्र में ५८ वर्षोपरान्त भी लोगों के दूभर जीवन का अफसाना ब्यान करता हैं. यहीं संघर्षरत मजदूर भारत में जो क्रांति लायेगें वह रुस सकी १९१७ की क्रांतित से भी बढ़कर उथल पुथल वाली होगी. डॉ. रत्नेश के गीत ने पाठकों को देश की पतनमयी अवस्था से अवगत किया हैं. पांडेय जी जब ८.१. वर्ष का बच्चा ८ घंटे बर्तन मांजेगा, तो कब पढ़ेगा. विद्या के स्तर का पतन सारे देश में गिर रहा हैं. शासक घोटालों में व्यस्त हैं.

साठ की आयु, लज्जा नहीं आती?
सफेद दाढ़ी, करके काली
कविता लिखों, प्रेम वाली
घर में तीन, बेटिया जवान
जो हैं अपनी, कुल की शान
बेटों ने तो, गुल खिलाये
मां-बाप बृद्धाश्रम आएं

धर्म सिहं गुलाटी, संगरूर, पंजाब

आपके इस नाम से मुझे लगा है कि कुछ न कुछ अवश्य आपका यह पत्र स्नेह की लहरों में गोते लगा रहा होगा. मैं चाहता हूं कि एक प्रति आप कृपया अवश्य भेजें. कृपा होगीं. तभी मेरे शब्दों के तार आप से प्रेम के रंग में जुड़ेगें. प्रतीक्षारत,

विजय प्रेमी, सदर कबाड़ी बाजार, मेरठ

विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. अनेकशः धन्यबाद. कम कीमत में एक अच्छी पत्रिका हैं विश्व स्नेह समाज. राजेन्द्र कुमार शुक्ल की कविता 'मजूर की रोटी' प्रभावित किया. आशीष दलाल की लघु कथा बदलाव भी एक अच्छी लघुकथा हैं. अन्या साम्रगिंया भी अच्छी लगी. पत्रिका की मंगलकामना सहित।

डॉ0 सतीश चन्द्र भगत, हाजीपुर, बिहार

आप द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. स्नेह के लिए आभारी हूॅ. काफी व्यस्तता के कारण पत्र प्रेषित करने में विलम्ब हुआ. इसके लिए क्षमा चाहता हूॅ. मैं साहित्य की अनेक विध ाओं में लिखता हूॅ. पर व्यंग्य लिखने में मेरी विशेष अभिरुचि हैं. विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों से जूड़ा हूॅ. सोचता हूॅ एक व्यंग्य रचना आपकी पत्रिका के लिए भी भेजूं. यथासमय प्रकाशित करेंगें. वैसे आपकी पत्रिका का क्या नियम कायदे हैं. मुझे मालुम नहीं. हो सके तो सारी जानकारी पत्र के माध्यम से देगें. पत्रिका दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति की मंजिल ओर बढ़े मेरी शुभकामना आप लोगों के साथ हैं. पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में.

गिरीश प्रसाद गुप्ता, देवघर, झारखंड

पुस्तकालय के सदस्यगण आपकी लोकप्रिय पत्रिका नियमित पढ़ना चाहते हैं. यह एक सामाजिक संस्थान है जिसका मूल उद्देश्य समाज में सद्भाव एवं आपसी भाईचारा को बढ़ावा देना हैं. यह संस्थान शिक्षित बेरोजगार युवकों द्वारा संचालित होता हें. इसमें आपका योगदान अपेक्षित है।

रामेन्द्र सिंह, पुस्तकाध्यक्ष, सर्व हितैषी पुस्तकालय, तेलमर, नालंदा, बिहार

इनके भी पत्र मिले

रवि रस्तोगी, मुख्य सपांदक, हिमालय और हिन्दुस्तान, ऋषिकेश
निगम प्रकाश कश्यप 'सुषमा' ग्राम-मिश्रपुर, पो.खैरा,जिला-मिर्जापुर, उप्र
रमेश गुप्ता,लुधियाना, पंजाब
बद्री लाल मेहरा 'दिव्य' कोटा, राजस्थान
धमेन्द्र सिंह, सागर, म.प्र.

सभी पत्र भेजनें वालों सूधी पाठकों हार्दिक धन्यबादः
संपादक

अपनी बात

कहीं भारत में लोकतंत्र की हत्या तो नहीं हो गई है

उत्तर प्रदेश के जून माह में सम्पन्न उपचुनाव में घटी घटनाओं को देखकर तो ऐसा लगता हैं जैसे भारत में अब लोकतंत्र रहा हीं नहीं. अबकी उपचुनाव में खासकर उत्तर प्रदेश में तो वह पूरी तरह समाप्त हो चूका हैं. जिसकी लाठी उसकी भैंस (जिसकी सत्ता उसकी चलती) वाली कहावत चरितार्थ हो रही हैं. लोकतंत्र कों जनता का, जनता के द्वारा चुना हुआ शासन तंत्र कहा जाता है. लेकिन उपचुनावों ने लोकतंत्र की सरेराह हत्या कर दी. जब आम मतदाता अपना मत पोलिंग बूथ तक जाकर भी नहीं डाल सका. जो मतदाता पोलिंग बूथ तक गया उसके घर में घूसकर लोगों को मारा गया, बम फोड़े गयें. चुनाव से पहले झुण्ड के झुण्ड राइफलधारियों की टीम के द्वारा अपनी विपक्षी पार्टी के समर्थकों के घर जाकर उन्हें धमकाना, मारना पीटना, बम फोड़ना, किसी समुदाय विशेष के लोगों को केवल वोट देने देना, अन्य को सरेराह पुलिस प्रशासन के सामने डाट डपटकर, जोर जबरदस्ती से भगा देना. यह लोकतंत्र की हत्या नहीं तो क्या हैं? उसमें भी डी.एम. एवं एस.एस.पी सहित पुलिस प्रशासन की भूमिका यह रही कि 5 फीट की दूरी से भी उन्हें बम के धमाकों की आवाज सुनाई नहीं पड़ी. प्रशासनिक अमले की मजबूरी को इस बात से भॅली भॉति समझा जा सकता हैं.. एक पत्रकार बंधु ने अपेछाकृत एक ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ क्षेत्राधिकारी से चुनाव में धांधली के संदर्भ में कुछ प्रश्न पूछे. पहले तो तथाकथित ईमानदार अधिकारी इधर–उधर टालने का प्रयास करता रहा लेकिन अंत मे झल्ला कर यह कह उठा "क्या मुख्यमंत्री के आदेश से बढ़कर कोई कार्य हैं.?"

दूसरा वाक्या एक मतदाता से जुड़ा है. मतदाता पोलिंग बूथ पर वोट डालने जाता है, वहां उसके नाम की परची पहले से कोई सज्जन लिए खड़े हैं. मतदाता द्वारा अपने नाम की पर्ची मांगने पर सज्जन मतदाता कहते हैं यह तो मेरा नम्बर हैं. मतदाता ठहरा पढ़ा–लिखा, क्लास टू का अफसर, वह तुरंत बोल उठा–तुम्हारी पत्नी का नाम क्या हैं? अब बेचारे सज्जन मतदाता हक्के बक्के रह गये. उस स्थान पर पुलिस खड़ी हैं, एस.पी.सीटी, मजिस्ट्रेट खड़े हैं पर उस तथाकथित सज्जन मतदाता का कुछ नहीं होता. क्योंकि वह सत्ताधारी पार्टी का किराये का मतदाता था. अरे भाई यह तो बस एक जुमला था. चुनाव जारी है बाहर से बस में भरकर समुदाय विशेष की महिलाओं लायी जाती है, बस में भरकर राइफलधारी मतदान के दिन सरेराह घूम रहे हैं. लेकिन क्या मजाल किसी पुलिस वाले की जो बोल दें. ऐसे साफ सुथरे माहौल में मतदाता बेखौफ होकर वोट मतदान करेगा तो कब करेगा. यही तो है भारतीय लोकतंत्र की असली पहचान.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

राजनितिक मुद्दा

मुस्लिम दलितों को भी दिया जाना चाहिए अनुसूचित जाति का आरक्षण

✍मो. फैय्याज अहमद कुरैशी

यबात हमेशा कही जाती है, कि मुसलमानों की हालत दलितों से बदतर हैं, ७० फीसदी मुस्लिम आबादी गरीबी रेखा से नीचे की जिन्दगी गुजारने पर मजबूर हैं, शैक्षणिक स्तर भी कमजोर है, ६० प्रतिशत आबादी रोजी रोटी के लिए कपड़ा धोने, सफाई का काम करने, मोचीगिरीं, कलन्दरी, जोगीगिरी, पासीगिरी, बुनकरी, धुनकरी, सिलाई, सब्जी व मीट फरोशी, चूड़ी फरोशी, माहीगिरी, मिरशिकारी, मेहतर का काम करने, होटलों में बैरागिरी, बीड़ी, अगरबत्ती बनाने, रिक्शा-ठेला चलाने यहाँ तक कि भीख माँगने तक को मजबूर हैं. इन सच्चाईयों को जानते हुए भी तथाकथित मुस्लिम नेता मुस्लमानों की इन बुनियादी सम्स्याओं के समाधान के लिए न ही कोई रास्ता निकालते हैं और न इन मुद्दों पर संघर्ष करते हैं, पूरे मुस्लिम समाज को भावनात्मक मुद्दे जैसे बाबरी मस्जिद, तीन तलाक, माडल निकाह, धारा-३७०, मुस्लिम आरक्षण आदि में उलझा कर रखे हुए हैं. यह ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें प्राथमिकता नहीं दी जा सकती हैं.

सर्वप्रथम दलित मुस्लिम आरक्षण की बात १ मई १९९४ को पटना में एम.एल.ए क्लब मैदान में ऑल इण्डिया यूनाईटेड मुस्लिम मोर्चा ने यह आवाज उठायी कि मुस्लमानों में भी दलित हैं, यह वही काम करते हैं, जो हिन्दु दलित करते हैं, इन्हें भी अनुसूचित जाति आरक्षण की सुविधा दी जाये, इसके लिए संविधान की धारा ३४१ के पैरा-३ (१९३५ में बनें संवधिान की धारा ३४१ पैरा-३ के एक्ट के तहत यह व्यवस्था दी गयी कि तीसरे तबके के लोगों को मुफ्त घर, बिना ब्याज के लोन, एम.पी. एम.एल.ए में आरक्षण दिया जाएगा. इसमें मजहब का कोई बंधन नहीं था.) में १९५० के राष्ट्रपति अध यादेश से लगाई गई धार्मिम प्रतिबंध को हटाया जाये या फिर १९५६ सिक्खों और १९९० में नौ बौद्धिष्टों को जिस तरह शामिल किया गया, उसी तरह दलित मुस्लिम को भी शामिल किया जाये. पहले इस मुद्दे पर काफी विरोध था लेकिन अब आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल-लॉ-बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना राबे हसन नदवी, फतेहपूरी मस्जिद के इमाम व खतीब डॉ० मौलाना मुफ्ती मोकर्रम, लखनऊ के मौलाना कल्बे आजाद, मौलाना सैयूयद नेजामुद्दीन, मौलाना गुलाम रसूल बलियावी के साथ ही साथ पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह, वरिष्ठ पत्रकार प्रभात जोशी भी इसकी खुलेआम हिमायत करने लगे हैं. उत्तर प्रदेश के नगर विकास मंत्री जनाब आजम खॉ ने भी आजमगढ़ में हुए मुस्लिम सम्मेलन में दलित मुस्लिम आरक्षण की बात उठायी थी. इस मुद्दे को कभी भी किसी मुस्लिम नेता ने नहीं उठाया, युनाईटेड मुस्लिम मोर्चा के तीव्र आन्दोलनों से बिहार सरकार मजबूर होकर बिहार व झारंखंड के संयुक्त विधान परिषद और विधानसभा में २००० में यह मुद्दा सर्वसम्मति से पारित हो गया और अभी केन्द्र सरकार के समक्ष लम्बित हैं, लोकसभा के शून्यकाल में डॉ० रघुवंश प्रसाद सिंह ने आवाज उठाई उसके बाद १८ दिसम्बर २००३ को लोजपा सुप्रिमों श्री रामविलास पासवान ने श्री रामचन्द्र पासवान, पप्पू यादव और हन्नान मुल्लाह के साथ मिलकर डेढ़ घंटे तक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लाकर संसद में जोरदार बहस किया. तब ९० प्रतिशत, संसद सदस्य इस मुद्दे के हिमायती दिखे और ध्यानाकर्षण प्रस्ताव को रूल १९३ के तहत कन्वर्ट कर बहस कराने की मांग करने लगे जिसे उस समय के लोकसभा अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी ने स्वीकार नहीं किया.

१९ अप्रैल २००५ को इसी मुद्दे को लेकर लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केन्द्रीय मंत्री श्री राम विलास पासवान के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह से मिला. जिसमें रामचन्द्र पासवान, सूरजभान सिंह सहित अन्य राज्यों के नेता भी मौजूद थे. बीस मीनट की वार्ता में प्रधानमंत्री ने प्रतिनिधि मण्डल को इस मुद्दे पर बातचीत करने को आश्वासन दिया.

(लेखक ऑल इण्डिया यूनाईटेड मुस्लिम मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व जनरल सेक्रेटरी, जनता दल उ.प्र.)

विदेशी कल्चर के कहर से खुद को बचाएं

'मां' को ममी (पिरामिडों में दफ़न शव) और पिता को 'डैड' (अंग्रेजी के डैथ शब्द से बना शब्द) मान लिया. पूराने जमाने में राक्षसों के ख़ुश होने के शब्द हेलय-हलो को अपनकार हम क्या कर रहे हैं! हैलो 'हेलय' का परिवर्तित रूप हैं तो क्या हम 'राक्षस' हो गये....?

✍ **डॉ0 विकास मानव**

संस्कृत में एक सूत्र है-"स्वधर्मेनिधनं श्रेयः." अर्थात अपने धर्म के लिए मर जाना भी श्रेयष्कर है. विदेशी संस्कृति के विष से आज भारतीय किस कदर प्रभावित हैं? उन्हें अपना अतीत याद नहीं, अपनी अस्मिता का उन्हें पता नहीं. मनोविज्ञान का आधारभूत सूत्र है: जो जैसा सोचता है, वैसा ही करता है और अंततः वैसा ही बन जाता हैं. हमारे साथ यही हुआ हैं.

जननी के लिए ऋषियों ने 'मां' शब्द दिया था जो आदर, श्रद्धा व अपनत्व का सूचक था. पूर्वजों ने पालक के अर्थ में जनक के लिए 'पिता' शब्द गढ़ा था. आज हम 'मां' को ममी (पिरामिडों में दफन शव) और पिता को 'डैड' (अंग्रेजी के डैथ शब्द से बना शब्द) मान लिया. ऐसा सोचते-कहते हम उनके साथ व्यवहार भी वैसा ही करने लगे और जीते जी वे मर गये हमारे लिए.

अभिवादन के लिए भारतीय संस्कृति ने 'नमस्ते' शब्द की खोज की थी. नमः + अस्ति अर्थात उस सत्ता को नमन जो सबमें हैं.

हम सभी में प्रभु परमात्मा का निवास मानकर, उसी को देखकर 'नमस्ते' बोलकर उसका अभिवादन करते थें. आज गुड मार्निंग, आफ्टरनून, इवनिंग, नाइट सरीखे तमाम शब्द कबाड़ों से भर लिया हमने अपने मानव-विश्व को. कोई मिलता है तो हमारें मुंह से 'हांय' निकलता है जो प्रसन्नता आहलाद का नहीं पीड़ा व विषाद का परिचायक हैं. वैदिक साहित्य बताता है कि राक्षस जब खुश होते थें तब मदिरा पीकर एक-दूसरे

की कमर हाथ में लेकर नाचते थे और हेलय-हेलय का उच्चारण करते थें. क्लब व डांस के रूप में बार कल्चर अपनाकर हम क्या कर रहे हैं! हैलो 'हेलय' का परिवर्तित रूप नहीं है क्या? तो क्या हम 'राक्षस' हो गये....? आयातित संस्कृति के अन्धनुकरण में हमने अपनी जड़े तक काट डाली.

दैनिक जीवन व छोटी-मोटी बातों तक में हम उनके गुलाम हो गये. टूटता परिवार, सड़ता समाज, बिखरता राष्ट्र व विकृत-पतित होता हमारा व्यक्तित्व अर्थात हश्र सामने हैं. कुछ नहीं बचेगा. विदेशी कल्चर के कहर से अपने को बचाएं. इसके पहले कि बहुत देर न हो जाए.

बागपत गेट, मेरठ, उ.प्र.

हमारे सम्मानित नये आजीवन सदस्य

सदस्य संख्या१०१

नामः अर्चना श्रीवास्तव

जन्मः २४ जून १९७६

पताः २६१/३३६, चक जीरो रोड, इलाहाबाद

शिक्षाः बी.ए., हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, प्राचीन इतिहास

रूचिः कविता, ग़ज़ल, गीत और लेख रचना. फैंशन डिजाइंनिग, इनटीरीयर डेकोरेशन, संगीत सुनना, पेंटिग्स बनाना (तैल चित्र, रेखा चित्र)

लेखन में रूचिः मानव भावों को, संवेदनाओं को हृदय से जैसा भी महसूस किया उसे अपने शब्द देने की तीव्र इच्छा ने ही लेखन की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया.

नोंच ले जैसे कोई नवजात पंछी के परों को
और फिर पूछे कि तू उड़ता नहीं है बोल क्यूँ?
क्यूं तेरी नीरव निगाहों में भरी हैं अश्रुधारा!
जबकि है चारों तरफ नीला गगन; आकाश सारा
इस विवशता से भी बढ़कर है करुण नारी गाथा
तोड़ता है; रौदता है जिसको पुरूषों का सहारा

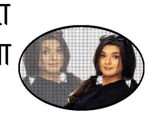

व्यक्तित्व

उदियमान व ऊर्जावान विधायक उदयभान करवरिया

❊ स्व. जगत नारायण करवरिया हेमवती नन्दन बहुगुणा के खिलाफ मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़े थे और मात्र 300 मतो से चुनाव हारे थे.

❊ छात्र जीवन से ही राजनीतिक चहल कदमी प्रारम्भ कर चुके श्री करवरिया अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान 1989 में महाराष्ट्र में अपने नेतृत्व में दूसरे राज्य के छात्रों को भी अध्यक्ष का चुनाव लड़ने देने की मांग को लेकर सफल रेल रोको आन्दोलन चलाया

इलाहाबाद जिले के लिए करवरिया परिवार का नाम किसी परिचय का मुहताज नहीं है. इसी परिवार के कुलदीपक ई० उदयभान करवरिया का जन्म २५ मई १६६६ को निवर्तमान इलाहाबाद जिले के मंझनपुर तहसील में भुक्खन मौला के द्वितीय सुपुत्र के रुप में हुआ था. भवन्स मेहता पब्लिक स्कूल, भरवारी से प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर इंटरमीडिएट तक की शिक्षा इसी विद्यालय में हुई. इटर की परीक्षा सी.बी.एस.ई बोर्ड से पास करने के बाद कॉलेज आफ इंजीनियरींग बडनेरा, अमरावती, महाराष्ट्र में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डीग्री हॉसिल करने चले गये. १६६१ में अपने पूज्य पिता जी के स्वर्गवासी होने पर परिस्थितियों ने आगे की शिक्षा ग्रहण करने में बाधा उत्पन्न कर दी. वे अपना व्यापार संभालने लगे.

आपके बड़े भाई श्री कपिल मुनि करवरिया कौशाम्बी जिला पंचायत के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं तथा छोटे भाई श्री सूरजभान करवरिया अपना व्यापार संभालते हैं. राजनीति, करवरिया परिवार के लिए कोई नयी बात नहीं है. इसके

पहले भी श्री उदयभान करवरिया के परपिता (दादा) स्व. जगत नारायण करवरिया हेमवती नन्दन बहुगुणा के खिलाफ मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़े थे और मात्र ३०० मतो से चुनाव हारे थे. यह चुनाव डा० जोशी के सहयोग से जनसंघ के टिकट पर भार्गव, मुल्ला जी ने लड़ाया था.

उसके बाद १६८५-८६ आपके पिता स्व० भुक्खन मौला, शहर दक्षिणी से निर्दल चुनाव लड़े थे और मात्र ३००० वोटों से सतीश जायसवाल से हार गये थें.

छात्र जीवन से ही राजनीतिक चहल कदमी प्रारम्भ कर चुके श्री करवरिया अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान १६८६ में महाराष्ट्र में रेल रोको आन्दोलन दूसरे राज्य के छात्रों को भी अध्यक्ष का चुनाव लड़ने देने की मांग को लेकर अपने ही नेतृत्च में लड़ा था. इस आंदोलन में सफलता भी मिली. पहली बार अमरावती में बनारस के सोमेश्वर मिश्र ने अध्यक्ष पद को ग्रहण किया. उसमें आपके अंदर पद लोलुपता नहीं थी. नहीं आप ही प्रथम अदर स्टेट अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त करते.

उसके बाद कुछ वर्षो के लिए राजनीतिक रुप से थोड़ा विलग हो गये श्री करवरिया १६६६ में डॉ० मुरली मनोहर जोशी के चुनाव से अपनी राजनीतिक सक्रियता बढ़ी दियें. अक्टूबर ६६ में इलाहाबाद जिला सहकारी बैंक के निर्वाचक बनें, फिर डायरेक्टर का चुनाव लड़ें उसके बाद निर्विरोध अध्यक्ष चुने गयें. १६६६ में दुबारा हुए चुनाव में संचालक मंडल सहित अध्यक्ष का चुनाव निर्विरोध हुआ. २००४ में सपा की सरकार आने पर वसूली धीमी होना कारण बताकर बोर्ड को सस्पेंड कर दिया गया. उनके राजनीतिक कैरियर को चार चॉद तब लगा जब वे २००२ के उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव में बारा विधानसभा में पहली बार भारतीय जनता पार्टी का परचम लहराते हुए विधायक निर्वाचित हुए. इन्होंने बहुजन समाज पार्टी के तीन बार विधायक रहे रामसेवक पटेल को हराया.

उदयभान करवरिया अपना अपना राजनीतिक गुरू डॉ० मुरली मनोहर जोशी को मानते हैं.

वर्तमान सरकार के बारें मे **शेष पे६**

पूछने पर उनका कहना है कि हमें सरकार से कोई समस्या नहीं हैं. बस आमजनता परेशान हैं. नियम कानून की धज्जिया उड़ रही हैं. अपने को राजनीतिक तेवर के लायक झूठ बोलने की आदत न होने को बताने वाले करवरिया का कहना है- ऊपर के नेता तो आपस में इकट्ठा रहते हैं, बीच वाले मारे जाते हैं. इस पर अंकुश लगाना चाहिए. राजनीति में चुनाव के लिए मानक तय करने को कहने वाले श्री करवरिया वास्तव में जननेता लगते हैं. जब उनके आवास पर आम आवाम को अपनी समस्या लिए आराम से कुर्सी पर बैठे देखा जाता हैं. वहां आम आवाम को धूप में खड़े होने व पानी के लिए तड़पने व बाहर जाने की जरूरत नहीं होती. बल्कि जननायक जननेता श्री करवरिया स्वयं अपने कर्मचारियों से बार-बार आम अवाम को पानी, मीठा चाय के लिए पूछने व उसे उपलब्ध ा कराते देखे जाते हैं. उनके वहां आने वाला कोई भी सक्स निराश होकर नहीं जाता. सबकी समस्या का यथा सम्भव समाधान तुरंत अधिकारी को फोनकर, फाइल में नोटकर करते हैं. वास्तव में भारत को आज ऐसे उदियमान व ऊर्जावान राजनेताओं की सख्त आवश्यकता हैं. ईश्वर आपको स्वस्थ दीर्घायु करें.

जिसका निज सत्य-बोध होता है।
उसका अक्सर विरोध होता है।।
जीने वालों को न पूछे कोई,
मरने वालों पे शोध होता है

रामेश्वर वैष्णव

है चरागों की हवाओं पर नजर,
देखिये, अब कब जले यहे गॉव-घर।।
हो गई अखबार जैसी जिन्दगी,
है नहीं माकूल कोई भी खबर

तरूण प्रकश

व्यंग्य

चक्कर एडमिशन का

डॉ कैशल किशेर श्रीवास्तव

मैंने अपनी शादी के समय ससुराल से मिली टाई बांधी और पत्नी को चमकदार साड़ी पहन कर तैयार होने को कहा उसने पूछा “क्यों किसी रिशेप्सन में चलना है क्या? मैनें कहा, नहीं अपने बच्चे के एडमिशन के लिए इन्टरव्यू देनें चलना हैं.”

हम दोनों तैयार होकर दहेज में मिले स्कूटर पर सवार होकर ब्रूमिंग फ्लावर इंग्लिश मीडियम स्कूल में पहुचे प्रिन्सिपल वहां एक बच्चे की नाक पोछ रही थी बच्चा चिला रहा था.

“आप कितनी बार, मेरी नाक पोंछेगी अब किसी दूसरे लड़के की नाक पोछिये ना.” संयोग उस बच्चे का पित आ ध ामका उसने धमकी दी.

“देखिए प्रिन्सिपल साहिबा, आपको नवागंतुक मॉ बाप पर बच्चों से प्रेम का इम्प्रेशन ही डालना है तो मेरे बच्चे की नाक ही क्यों पोछती है, सुबह से तीस बार आप उसकी नाक पोछ चुकी हैं. बेचारे की नाक लाल पड़ गई. मैं अब पुलिस में रिपोर्ट कर दूंगा.

अब प्रिन्सिपल साहिबा खिसिया गई. बोली तुम्हारी जो फीस बकाया है उसे क्यों नही चुकाते फिर मुझसे मुखातिब हुई मैं इनकी बातों का बुरा नहीं मानती. हमारे देश में तो जो भला करता है उसी को गोली मार दी जाती हैं. जैसे महात्मा गांधी को मार दी गई. उन्होंने महात्मा गांधी के बाजू में बैठे का प्रयत्न किया.

हमारे साक्षात्कार का नम्बर एक घंटे बाद आया. पत्नी एक औसत महिला की तरह ज्यादा व्यवहारिक हैं उसने ही प्रिन्सिपल साहिबा का साक्षात्कार लेना चालू कर दिया उसने पूछा.

“एडमीशन जब बच्चे का होना है तो आप मां बाप का इन्टरव्यू क्यों ले रही हैं.”

प्रिस्सिपल साहिबा ने जवाब दिया, “वो ऐसा है कि स्कूल में तो पढ़ाई होगी नहीं हम यह देखना चाहते हैं कि मां बाप बच्चे को घर में पढ़ा सकते है या नहीं. आखिर कार स्कूल का नाम भी ऊँचा करना हैं.”

मेरी पत्नी ने फिर पूछा, “जब हम आपको पन्द्रह हजार रुपये डोनेशन देगें और एक हजार रूपये महीने फीस देगें तो आप बच्चे को क्या सिखायेगें?”

मेडम, “हम बच्चे को घुड़सवारी सिखाने के लिए भरती नहीं कर रहे हैं उसे तो केवल एक बार ही घोड़े पर बैठना है वह भी पन्द्रह साल बाद उसकी शादी के समय. फिर बोर्ड के इम्तहान में न तो घुड़सवारी का पेपर ही होता है और न ही घुड़ सवारी का प्रेक्टिकल.पत्नि ने आश्चर्य चकित होकर कहा.

तो बहनी जी (प्रिन्सीपल ने इस बार मेडम के स्थान से उतार कर पत्नि को बहनजी के स्थान पर ला पटका) यदि आपको बच्चे की किताबें ही रटाना है तो किसी सस्तें पांच सौ रुपये फीस वाले स्कूल में भरती करवा दीजिए या फिर तो खैराती (सरकारी स्कूल) ठीक रहेगा. इतना सुनकर हम सरकारी स्कूल की ओर चल पड़ें.”

देवरिया महोत्सव०५

१७ अप्रैल २००५ बाबा इन्द्रमणि जनता उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, टीकर देवरिया के प्रांगण में देवरिया महोत्सव का आयोजन किया गया. अपरिहार्य कारणों वश कार्यक्रम को सीमित करना पड़ा. इस कार्यक्रम का आयोजन हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज, जी.पी.एफ.सोसायटी व स्नेहालय -अनाथाश्रम व वृद्धाश्रम के सहयोग से किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि देवरिया के सांसद, समाजवादी पार्टी के लोकसभा में मुख्य सचेतक, प्रसिद्ध समाजवादी नेता व लेखक माननीय मोहन सिंह थें. विशिष्ट अतिथि के रुप में भागलपुर की ब्लाक प्रमुख श्रीमती मालती देवी, कुशीनगर के अपर मुख्य अधिकारी श्री बलराम प्रसाद, बरहज विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री स्वामी नाथ यादव, वरिष्ठ समाजवादी नेता श्री विजय बहादुर सिंह उपस्थित थें. कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नन्दलाल दुबे, मंत्री, खाद्यी गांधी आश्रम ने की.

कार्यक्रम का संचालन श्री कृष्णा शंकर तिवारी ने किया. कार्यक्रम में पुष्पेन्द्र कुमार दुबे सहायक अध्यापक ने अतिथियों का स्वागत किया.

इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी बरहज श्री देवेन्द्र नाथ द्विवेदी को स्व. केदार नाथ दूबे स्मृति पुलिस सेवा पदक, डॉ. रघुवंश मणि द्विवेदी प्रवक्ता, नवोदय विद्यालय गोण्डा को स्वं. ओंकार नाथ दूबे शिक्षक सेवा पदक तथा हिन्दी दैनिक राष्ट्रीय सहारा के सम्मानीय श्री अजय मिश्र व दैनिक जागरण के श्री रामविलास प्रजापति को विश्व स्नेह समाज पत्रकारिता सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया.से सम्मानित किया गया.

कार्यक्रम कें संयोजक विश्व स्नेह समाज के संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने संस्था के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि स्नेहालय, का खुलना यह दर्शाता है कि आज हमारा सामाजिक पतन हो रहा हैं. अगर हम सब अपने मां बाप जो वृद्ध हो चले हैं उनका घर में ही सेवा सत्कार करें, उनका सम्मान करें तो अगर हम अपने घर के बुजुर्गो को थोड़ा

मैं माइक से घोषणा नहीं बल्कि कार्य करने में विश्वास करता हुॅ: मोहन सिंह

देवरिया महोत्सव में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए माननीय सांसद मोहन सिंह ने कहा कि मैं माइक से घोषणा नहीं करता बल्कि उसको कार्यरुप देने में विश्वास रखता हूॅ. उन्होंने ने कहा स्वं० ओंकार नाथ दूबे मेरे छोटे भाई जैसे थें. उनके रहने पर मैं अक्सर विद्यालय में आया करता था. उनकी मृत्यु के बाद मेरा इस विद्यालय के प्रागंण व क्षेत्र में आना जाना कम हो गया. लेकिन जब श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी ने मुझसे कहा कि हम आपका नागरिक अभिनंदन करना चाहते हैं तो मेरे अंदर के इस क्षेत्र के प्रति स्नेह ने व्यस्तम कार्यक्रम के बावजूद मुझे कार्यक्रम देने को प्रेरित किया. श्री द्विवेदी जो स्नेहालय(वृद्धाश्रम व अनाथाश्रम) व इस कार्यक्रम के प्रणेता हैं उनकी इतनी कम उम्र में समाज के प्रति चिंतन की मैं कद्र करता हुॅ. आज समाज को ऐसे ही युवाओं की जरूरत हैं. आज लड़का विदेशों में रहता हैं. घर में मॉ बाप नौकरो के सहारे रहते हैं. बाहर से पैसा आया नौकरों से अस्पताल में भर्ती करा दिया. मृत्यु हो जाने पर शवदाह गृह में जला दिया गया. यह गलत परम्परा पड रही हैं. यह हमारी सांस्कृतिक विरासत बड़ो बुजुर्गो का सम्मान करों का पतन का धोतक हैं. हमें सचेत होकर रहना चाहिए. मैं माइक से घोषणा नहीं बल्कि कार्य को करने में विश्वा करता हूॅ.मैं स्व० महेन्द्र प्रताप सिंह पुस्तकालय व स्नेहालय के जो भी बन पड़ेगा करने का प्रयास करूंगा. इस विद्यालय की मान्यता मैनें ही जब मैं लघु उद्योग राज्य मंत्री था तो दिलवाया था. इस क्षेत्र से मेरा बेहद स्नेह रहा हैं और आगे भी बरकरार रहेगा.

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए सांसद मोहन सिंह

प्रतिभाएं उम्र की मोहताज नहीं होतीः डॉ. अजय

प्रतिभाएं उम्र की मोहताज नहीं होती. शकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द जैसी महान विभूतियां कम उम्र में ही चल बसी थी लेकिन हम उनके कार्यो को आज भी याद करते हैं. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी कार्य भी उनमें से एक हैं. जो युवावस्था में ही महान कार्यों को अंजाम देने में लगे हुए हैं. समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित करना, स्नेहालय(अनाथश्रम व वृद्धाश्रम) की अवधारणा पालना ये सब महान कार्य हैं. भारतीय संस्कृति मातृ देवो भवः, पितृ देवो भव, की अवधारणा रखती हैं. लेकिन इसका पाश्चात्य संस्कृति के चलते पतन हो रहा हैं. जिसके चलते श्री द्विवेदी यह सोचना पड़ा. उक्त उद्गार बरहज से राष्ट्रीय सहारा के ब्यूरों एव बी.आर.डी.पी.जी. कॉलेज के प्रवक्ता व विश्व स्नेह समाज पत्रकारिता सेवा सम्मान से सम्मानित डॉ. अजय मिश्र ने व्यक्त किए.

माननीय मोहन सिंह को अभिनंदन पत्र भेंट करते गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

माननीय मोहन सिंह का मार्ल्यापण करते पुष्पेन्द्र दुबे

दायें से बायें श्री बलराम प्रसाद, गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, गिरिराज, श्री मोहन सिंह, डॉ. नीरज, गौरव व अन्य

सा सम्मान दें उन्हें बोझ न समझ कर अपना एक सामाजिक दायित्व मानकर चलें तो वृद्धाश्रम के बारे में सोचने की नौबत हीं नहीं आएगी. इस वृद्धाश्रम में ऐसे वृद्धजन जिनका कोई सहारा नहीं है उन्हे निःशुल्क खाने पीने रहने की सुविधा दी जाएगी तथा जो वृद्ध जन सम्पन्न होते हुए भी इस आश्रम में रहना चाहते हैं उनसे शुल्क लेकर उनके रहने व खाने की व्यवस्था दी जाएगी. श्री द्विवेदी ने मुख्य अतिथि से इस क्षेत्र के छात्रों के लिए स्व. महेन्द्र प्रताप सिंह पुस्तकालय तथा वृद्धाश्रम में सहयोग की मांग की. उन्होंने कार्यक्रम में सहयोग के लिए श्री कृष्णा शंकर तिवारी, श्रीराम दुबे के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया तथा अनिल दुबे, रघुवंश मणि, सत्यानन्द, गिरिराजी दूबे के प्रति आभार व्यक्त किया. अपने इस आयोजन में दिन रात एक करने वाले, अपने गैर जिम्मेदाराना स्वभाव के विपरीत बहुत जिम्मेदारी से प्रत्येक कार्य को अजाम देने वाले पुष्पेन्द्र कुमार दुबे को कोटिशः धन्यबाद दिया साथ ही भविष्य के प्रति आशा भी जतायी.

कार्यक्रम में श्री पवहारी शरण दुब-रि० एस.पी.एम., श्री प्रद्युम्न नारायण मिश्र, रामअधार मिश्र, श्री दीप नारायण राव, श्री राकेश तिवारी,सहा. अध्यापक, चकबन्दी दुबे, साधु दुबे, अरूण कुमार दुबे, सुरेश दुबे,नितेश कुमार दुबे, सौरव कुमार तिवारी, गौरव कुमार तिवारी, दशरथ चौहान, नेबूलाल, संतलाल इत्यादि उपस्थित रहें.

प्रारब्ध

प्रकाश सूना

कन्यादान हेतु पंडितजी ने जैसे ही कन्या के पिता बनवारी लाल के हाथ में जल दिया और मंत्र पढ़ने लगे तो बनवारी लाल ने एक पल के लिए अपनी पत्नी की ओर देखा, फिर मंत्र पूर्ण होने पर जल को अपने दामाद के हाथो में छोड़ दिया.

विदा के समय का दृश्य अत्यन्त मार्मिक हो गया था. बनवारी लाल व उनकी पत्नी की आंखों से ऑसू रूक नहीं पा रहे थें. संजना कभी अपने पिता के सीने से लग कर रोती तो अपनी मॉ से लिपट कर. बनवारी लाल ने दहेज के रुप में काफी कुछ दिया था. सामान बस में लादा जा रहा था तथा वर के पिता बारातियों से बस में बैठने हेतु बार–बार अनुरोध कर रहे थें. दुल्हा–दुल्हन जब कार में बैठ गए तो बनवारी लाल ने वर के पिता से हाथ जोड़कर विनती की–शादी में किसी प्रकार की कोई कमी रह गई हो तो क्षमा कर देना.

नहीं, नहीं समधी जी! ऐसा भाव मन में न लायें, आपने तो गॉव में भी शहर जैसा प्रबंध किया हैं. बारातियों द्वारा भी कोई शिकायत नहीं की गई. अच्छा! अब विदा दें, वैसे भी काफी दूर जाना हैं.

रास्ते के लिए नाश्ता व खाना बस में रखवा दिया हैं. आपसे एक विनती करनी थी कि यदि मेरी बेटी से जाने–अनजाने कोई भूल हो जाए तो उसे पिता का स्नेह देते हुए क्षमा कर देना.

आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें, आपकी बेटी अब हमारे कुल की शोभा हैं.

बनवारी लाल व उसके पारिवारिक सदस्य अश्रुपूरित दृष्टि से डोली को जाते हुए देखते रहें. बस में सभी बारातियों में एक बात पर अवश्य कानाफूसी हो रही थी कि दुल्हन का चेहरा किसी ने भी नहीं देखा. एक बुजुर्ग द्वारा बताने पर कि गॉवों में अभी घुघट प्रथा समाप्त नहीं हुई हैं. तो वे कुछ आश्वस्त हुए.................

संजना की आज सुहागरात थी. विभिन्न प्रकार के फूलों से कमरे को सजाया गया था. संजना ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया तो उसका स्वागत भींनीं–भीनीं सुगंध ने किया. वह भाव–विभोर हो उठी. कुछ समय पश्चात दरवाजे पर खिलखिलाहट हुई तो वह अपने आपको संभालने लगीं. प्रभाष धीरे से संजना के करीब बैठ गया. कुछ पल उसने लाज में डूबी अपनी पत्नी को देखा और समीप आते हुए बोला कि घुंघट की यह दीवार अब कैसी? आज तो हमारे मिलन की रात हैं.

संजना का दिल जोर–जोर से धड़कने लगा लेकिन वह संयत हो अपने आपको संभालने लगी. संजना की खामोशी देख प्रभाष ने सोचा कि शायद लज्जा से वह शरमा रही हैं. उसने एकाएक संजना का घुघट उठाया तो वह एकबारगी चौक उठा– तुम..... ? लेकिन मेरी शादी तो वीना से तय हुई थी, तुम यहां कैसे?

यह आप क्या कह रहे हैं, पिताजी ने तो मुझसे कहा था कि आप लोगों से बात हो गई हैं, तभी मैं इस शादी के लिए राजी हुई थी, वर्ना मैं अपनी बहन का स्थान क्यों लेती.

हमसे इस बारें में कोई बात नहीं हुई, यह तो सरासर धोखा देने वाली बात हैं, इतना कह प्रभाष कमरे से बाहर निकल गया.

....

मॉ......... बाबूजी!

क्या बात हैं प्रभाष! इस तरह क्यों चिल्ला रहा हैं?

बाबूजी! हमारे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ हैं.

क्या बकता हैं? कैसा धोखा?

तब तक घर के सभी लोग इकट्ठे हो चुके थें और विस्मयता से प्रभाष की ओर देखने लगें.

बाबूजी! आप ही बतायें, जब हम लड़की देखने गये थें तो हम लोगों ने कौन सी लड़की पसंद की थी?

कौन सी क्या, वीना पसंद की थीं.

लेकिन बाबूजी! ऊपर जो लड़की दुल्हन के रूप में बैठी हैं, वह वीना नहीं बल्कि उसकी छोटी बहन संजना हैं.

क्या........ इतना बड़ा धोखा. बनवारीलाल वैसे तो कितने सीधे सादे दिखाई देते हैं, परन्तु वास्तविकता तो कुछ और निकल रही हैं.

राधेश्याम की पत्नी पहले तो आश्चर्यचकित हुई फिर वह अपने पति से बोली–लेकिन, अब क्या हो सकता हैं? शादी हो ही चुकी हैं.

तुम इसे शादी कहती हो, यह तो धोखा हैं, धोखा. कल ही इसका फैसला करके आऊँगा.

उस बेचारी के सम्बन्ध में भी तो कुछ सोचों, आखिर उसका क्या कसूर हैं?

उसके बारे में हम भला क्यों सोचें, उसके पिता को सोचना चाहिए था कि इसका परिणाम क्या होगा?

मैं तो कहती हूँ कि भाग्य का खेल समझ कर संजना को अपनी बहू

स्वीकार कर लो.
नहीं, नहीं..... इस धोखे का तो बनवारी लाल को मजा चखाना ही पड़ेगा.

....

संजना की स्थिति विचित्र सी हो गई थी. वह अवाक सी कभी स्वयं को देखती तो कभी सजी हुई सेज को. अपने मन ही मन सोचने लगी कि जब पिताजी ने इन लोगों से बात नहीं की थी तो मुझे शादी करने के लिए विवश क्यों किया. उसकी ऑखों से अश्रु–धार बहने लगी और एक–एक करके उसने अपने सारे गहने उतार कर पलंग पर रख दियें.

....

यह लो बनवारीलाल! संभालों अपनी लाडली को जिसका कन्यादान तुमने बड़े चाव से किया था.
लेकिन हुआ क्या समधीजी! मेरी बेटी से ऐसी क्या भूल हो गयी जो ....?
वाह! तुम तो ऐसे पूछ रहे हो जैसे तुम्हें कुछ पता हीं नहीं. अब इतने भी भोले ना बनो.
मैं.... मेरा मतलब था...............
मतलब तो सब पता चल जायेगा जब सारी उम्र अपनी लाडली को घर में बिठाये रखोगें.
मैं कुछ समझा नहीं.
वैसे तो समझ गये होगें लेकिन फिर भी समझाये देता हूॅ. बनवारी लाल! धोखा देने को क्या हम हीं मिले थें?
धोखा?? कैसा धोखा?
यह धोखा नहीं तो क्या हैं? लड़की कौन सी दिखाई और ब्याह दी कौन सी?
ओह.....
अब अफसोस करने से कोई फायदा नहीं, यह तो पहले सोचना था कि आखिर इसका अंजाम क्या होगा?
राधेश्याम जी! आपको याद होगा जब आप हमारे यहॉ लड़की देखने आये थे तो हमने पहले संजना ही दिखाई थी.
हॉ! हॉ! अच्छी तरह याद हैं लेकिन मेरे बेटे ने तो वीनाको पंसद किया था और आप भी राजी हो गए थें.
लेकिन राजी मैं तभी हुआ था जब आप लोग काफी जोर देने लगे थें.
उससे क्या फर्क पड़ता हैं, आखिर हॉ तो हो गई थी, फिर यह धोखा किसलिए?
मैंने आपको कोई धोखा नहीं दिया बल्कि आपको धोखे में रखना मेरी बेटी वीना ने स्वीकार नहीं किया.
मैं कुछ समझा नहीं.
सच बात तो यह हैं कि मेरी बेटी वीना जिसे आप लोगों ने पंसद किया था वह..... चर्मरोग से पीड़ित हैं और हाथ व चेहरे को छोड़कर उसके सारे बदन पर सफेद दाग हैं. हमने काफी इलाज कराया परन्तु ठीक नहीं हो पाई.
क्या......?
मैंने आपके दबाव में हॉ तो कर दी थी परन्तु वीना ने विवाह से ठीक दो दिन पहले यह कह कर साफ इंकार कर दिया कि इस तरह धोखा देने से मेरी जिन्दगी नरक बन जाएगी. मैं समझ नहीं पा रहा था कि अब क्या होगा? शादी के कार्ड बंट चुके थे और मेहमान भी आने शुरू हो गये थें. आपके यहॉ भी पूरी तैयारी हो चुकी थी. ऐसे में आपको भी किस मुॅह से मना करता? आखिर जब कुछ सुझाई नहीं दिया तो ऐन शादी के मौके पर वीना के स्थान पर अपनी बेटी संजना को दुल्हन के रूप में मनाना पड़ा, हालांकि मना उसने भी किया था.
लेकिन यह बात तो आप बता सकते थें.
सोचा तो था परन्तु आंशका के वशीभूत ऐसा नहीं कर सका.... अब तो मेरी इज्जत आपके हाथों में.... यह कहते हुए बनवरीलाल भाव–विहवल हो उठ और उनकी ऑखों से आंसू निकल पड़ें.
वह याचकता भरी दृष्टि से अपने समधी की ओर देखने लगें.
राधेश्याम ने अपने समधी को गले लगा लिया और बोले–बनवारी लाल जी. आप अगर यह सच्चाई पहले ही बता देते तो यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती. खैर! जो कठोर शब्द मैंने आपके प्रति कहे हैं, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूॅ! हॉ! अगर भगवान ने मुझे दूसरे बेटा दिया होता तो मैं वीना को अपनी बहू के रूप में सहर्ष स्वीकार कर लेता. बीमारी तो सबको हो सकती हैं, लेकिन ऐसे स्पष्ट विचारें वाली लड़की तो बड़े भाग्य से मिलती हैं–फिर अपने बेटे प्रभाष से कहने लगे–जाओ बेटा! बहू को ले आओं. घर पर सभी हमारी राह देख रहे होगें.

गॉधी कॉलोनी, मुजफफरनगर, उ.प्र.

गजल

इश्क़ का दुश्मन ज़माना है तो है
हुश्न का अपना फ़साना हैं तो हैं
इश्क़ के आगोश में मिला सुकूं
हुश्न का अपना ठिकाना है तो हैं
ज़िदगी भी एक हसीन ख्वाब हैं
मौत से मुॅह क्या छिपाना, है तो है
है अज़ल से इश्क़ की आदत हमें
शौक़ उनका दिल दुखाना है तो हैं
वे मुहब्बत, वे अदब औ बेवफा
'खाकी' को क्या आजमाना है तो हैं

डॉ. ओंकार माधव 'खाकी'
चित्रकला विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़, उ.प्र.

रोता हॅसता रहा आदमी, बनता मिटता रहा आदमी
सर्प से भी विषैला अधिक, हॅस के डसता रहा आदमी। रमेशचंद्र शर्मा

डी–4, उदय हाउसिंग सोसाइटी, बैजलपुर, अहमदाबाद

साहित्यिक गतिविधियां

२८, २९ मई २००५ को इलाहाबाद हिन्दुस्तानी एकेडमी सभागार में दो दिवसीय साहित्य मेले का आयोजन राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' ने जी.पी.एफ.सोसायटी, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, तारिका विचारमंच के सहयोग से आयोजित किया. यह कार्यक्रम चार सत्रो में विभाजित था. प्रथम सत्र में

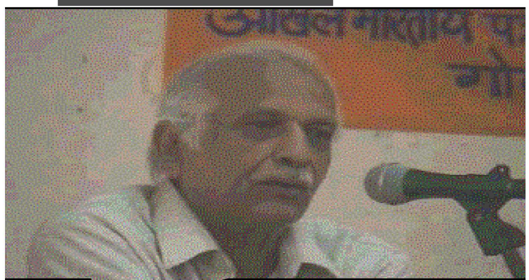

साहित्य मेला ०५ कार्यक्रम में बोलते हुए हिन्दुस्तानी एकाडमी के अध्यक्ष श्रीयुत पं. हरिमोहन मालवीय

२८, २९ मई साहित्य मेला:०५

साहित्य मेला, पुस्तक प्रर्दशनी का उद्घाटन व लघु पत्रिकाओं की चुनौतियां : प्रथम सत्र

प्रथम सत्र का उद्घाटन विज्ञान परिषद के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपल मिश्र ने किया. अखिल भारतीय पत्र पत्रिका व पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् लघु पत्र-पत्रिकाएं वं चुनौतियों विषय पर बोलते हुए उन्होंनें कहा- **"लघु पत्र-पत्रिकाओं को जनोपयोगी और समाजोपयोगी बनाने की पहल करनी होगी ताकि वे निरन्तर प्रकाशन की ओर अग्रसर रहें. मानवीय मूल्यों से सरोकार रखकर जीवन की अनिवार्यता अंग बनकर ही लघु पत्रिकाएं दीर्घकाल तक जीवन्त रह सकती हैं और समय व समाज के सापेक्ष उनमें बदलाव भी जरूरी हैं"।** संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० राम सेवक शुक्ल ने किया. जिसमें डा० लालता प्रसाद द्विवेदी ने विषय प्रवर्तन किया. गांव की नई आवाज के सम्पादक विजय चितौरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा-पत्रिकाओं के लिए पाठक वर्ग की रूचियों का ध्यान रखना जरूरी हैं. वे स्तरीय और ठोस सामग्री देगीं तो निश्चय ही उनकी पहुंच आम पाठकों तक बनेगी. अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के सम्पादक अरूण अग्रवाल ने कहा-पत्रिकाओं का निकालना उतना कठिन नहीं हैं जितना उन्हें बाजार में टिकायें रखना. यदि थोड़ा प्रयास करके पत्रिकाएं नियमित प्रकाशित होती रहें तो

साहित्य मेला ०५ के उद्घाटन सत्र में बोलते मुख्य अतिथि विज्ञान परिषद के प्रधानमंत्री डॉ० शिवगोपल मिश्र।

उन्हें पाठक वर्ग तैयार करनें में कठिनाई नहीं होगी तथा सरकारी विज्ञापनों की भी एक निश्चित सीमा तय हो जाएगी. अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ० रामसेवक शुक्ल ने कहा-यदि समाज निर्माण का आदोलन पत्रिकाएं अपने हाथ में लेती हैं तो वे सार्थक बन जाती हैं. विशिष्ट अतिथि कैलाश तिपाठी ने कहा -मनोवृति परिवर्तन का काम पत्रिकाओं को करना चाहिए. डॉ० हरि मोहन मालवीय जी ने कहा - **पत्रिकाओं की चुनौतियां कम नहीं हैं उन्हें दृढ़ता के साथ स्वीकार करके हम साहित्य निर्माण का कार्य अनवरत कर सकते हैं, विषय विशेष, वर्ग विशेष की पत्रिकाएं दीर्घकाल तक चलती रहती हैं.** गोष्ठी का संचालन तारिका विचार मंच व भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के संयोजक डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया और अतिथियों का स्वागत व आभार हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' के संपादक व जी.पी.एफ.सोसायटी के प्रंबंधक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. गोष्ठी में गांव की मेड़ के संपादक श्री वीरेन्द्र पाठक, सौरव कुमार तिवारी, बसन्तलाल त्रिपाठी, कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी, चिरकुट इलाहाबादी, रामनाथ त्रिपाठी रसिकेश, महाकवि घनश्याम पाण्डेय त्रिफला राजेन्द्र तिवारी दुकान जी, कृष्ण कुमार गिरी आदि ने भी अपनी भागीदारी निभाई.....................

साहित्य श्री समाज श्री सहित अन्य सम्मान

द्वितीय सत्र

कार्यक्रम का दूसरा सत्र भोजनोपरान्त अपरान्ह ३ बजें प्रारम्भ हुआ. इसमें सर्वोत्कृष्ट साहित्य श्री, समाज श्री सहित देश के कोने से कोने से आये साहित्यकारों व समाजसेवियों का सम्मान किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ब्रहमर्षि दशरथ नारायण शुक्ल अपर आयुक्त थें.

सम्मानित होने वाले साहित्यकारों में नई दिल्ली की श्रीमती राज बुद्धिराजा को साहित्य श्री ५००१, डॉ. अनवार अहमद ५००१, इलाहाबाद ५००१ नगद समाज श्री से सम्मानित किया गया.

समाज साहित्य का प्रतिबिम्ब हैं साहित्यकारों को समाज व समय के सापेक्ष अपनी रचना करनी चाहिए. चरित्र निर्माण की भूमिका में ऐसे आयोजनों के माध्यम से जनचेतना चलानी चाहिए. श्री द्विवेदी को इस तरह के इलाहाबाद में प्रथम आयोजन के लिए मेरी ढेरों शुभकामनाएं. उक्त उदगार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्रहमर्षि दशरथ नारायण शुक्ल, अपर आयुक्त, इलाहाबाद ने साहित्यकारों व समाजसेवियों को सम्मानित करने के बाद अपने उदबोधन में व्यक्त किये.

सम्मानित होने वाले अन्य विद्वजनों में **प्रो. धर्मवीर साहनी**-ग्वालियर-डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान, **डॉ. प्रमोद सक्सेना**-भोपाल-सुमित्रानदन पंत सम्मान, **श्री कैलाश त्रिपाठी**-औरैया **रसूल अहमद सागर, डॉ. कृष्ण मुरारी शर्मा**-ग्वालियर व **श्री भानुदत्त त्रिपाठी**-उन्नाव को निराला सम्मान,

निराला सम्मान से सम्मानित श्री कैलाश त्रिपाठी

श्रीमती प्रभा पाण्डेय पुरनम-जबलपुर व **डॉ. कुमुदिन नौटियाल** -महादेवी वर्मा सम्मान, **श्री रमण सीही**-खगड़िया-उपेन्द्र नाथ अश्क, **डॉ. दिवाकर दिनेश गौड, डॉ. माधव राव रेगुलपाटी** व **श्री एस.बी.मुरकुटे** -कर्नाटक् को मुंशी प्रेमचन्द्र सम्मान, **श्रीरामयज्ञ शर्मा पंकिल**-ग्वालियर-जयशंकर प्रसाद सम्मान, **मिस रचना यादव**-अहमदाबाद, **राजेश सिह**-इलाहाबाद, **कुमारी श्रद्धा**-मुम्बई को युवा रचनाकार, **श्री राजेश्वर प्रसाद उनियाल**-मुबंई व **श्री सत्यवान नायक**-छत्तीसगढ़ को जगदीश गुप्त सम्मान तथा समाज सेवियों में **श्री संत कुमार सिंह**-गिरीडीह को समाज रत्न **श्रीमती सोशन एलिजाबेथ**-इलाहाबाद को समाज रत्न, **डॉ. वीरेन्द्र कुमार दुबे**-जबलपुर, पतविन्दर सिंह-इलाहाबाद, **श्री ओमप्रकाश वर्मा** को समाज गौरव,**रमेश यादव**-इन्दौर को स्व. पं. गोरखनाथ दुबे सम्मान,**श्री राधाकृष्ण शर्मा**-छपरा को विशिष्ट समाज सेवी, **श्रीमती आर.यमुना**-बरगंल को बढन्ता देवी समाज सेवी सम्मान, **डॉ. मो. रियाज शाही**-इलाहाबाद को स्वास्थ्य सेवक सम्मान से सम्मानित किया गया.

अखिल भारतीय पत्र पत्रिका व पुस्तक प्रर्दशनी का उद्घाटन तथा लघु पत्र-पत्रिकाओं की चुनौतियां विषय पर विचार गोष्ठी, द्वितीय सत्र में साहित्यकारों व समाज सेवियों का सम्मान, तृतीय सत्र अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, चतुर्थ सत्र पत्रकारों व कवियों का सम्मान व समापन का था.

साहित्य मेला.०५ में कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए विश्व स्नेह समाज के संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि विगत वर्ष देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समाज श्री व साहित्य श्री २००४ हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित की गयी थी. देश के कोने कोने से साहित्यकारों व समाज सेवियों ने अपनी प्रविष्टियां भेजीं. उन प्रविष्टियों पर निर्णय लेना बहुत ही दुष्कर कार्य था. इसके लिए ५ विद्वजनों की एक कमेटी गठित की गयी. जिसमें से प्रत्येक व्यक्ति ने अपने-अपने अलग-अलग

साहित्य श्री. ५००१ नगद सम्मान से सम्मानित: डॉ० श्रीमती राज बुद्धिराजा

इस सम्मान समारोह के सर्वोत्कृष्ट सम्मानों में से एक साहित्य श्री, ५००१ रुपयें नगद का यह सम्मान दिल्ली की **डॉ० श्रीमती राज बुद्धिराजा** को प्रदान किया गया. यह सम्मान डॉ. रामकुमार वर्मा ट्रस्ट की ओर से डॉ. रामकुमार वर्मा जनशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया. १६ मार्च १९३७ को लाहौर में जन्मी एम.ए.-हिन्दी, पुष्प सज्जा, इकेबाना, पी.एच.डी, संस्कृत हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, जर्मन, जापानी व अंग्रेजी की ज्ञाता १९६७ से दिल्ली विश्वविद्यालय के कालिन्दी कॉलेज के अतिरिक्त तोक्यों, पेरिस, रोम और लंदन विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापन किया. वर्णमाला से लेकर स्नातकोत्तर तक तीन हजार से अधिक राजनयिकों को अध्यापन किया. अभी तक लगभग ४२ पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका हैं. तीन हजार से अधिक आलेख कविताएं देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं.

जापान सम्राट महामहिम अकिहितो द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान से अलंकृत, साहित्यकार एवं कृति सम्माना, महिला शिरोमणि, रत्न शिरोमणि, भारतीय प्रतिष्ठा, राष्ट्रीय एकता मीडिया अवार्ड और यू.जी.सी. के पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च फैलोशिप से सम्मानित.

१९७२ से ८१ तक इंचार्ज, नॉन कालेजिएट वुमन्स एजुकेशन बोर्ड, दिल्ली विश्व विद्यालय एवं अध्यक्ष- भारतीय जापान सांस्कृतिक परिषद हैं.

डॉ० अनवार अहमद को समाज श्री देते हुए अपर आयुक्त श्री दशरथ नारायण शुक्ल व गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

अंक प्रदान किये. अंको के योग जिसका सर्वाधिक रहा उसे साहित्य श्री, समाजश्री व अन्य पुरस्कारों हेतु चयनित किया गया. यद्यपि पुरस्कारों हेतु चयन में पूर्णरूपेण सावधानी बरती गयी हैं. फिर भी कहीं अगर त्रुटि हो हो गयी तो क्षमा चाहूंगा. यह सम्मान प्रत्येक वर्ष प्रदान किये जाएंगें. अगला कार्यक्रम फरवरी ०६ में आयोजित किया जाएगा. अगले वर्ष से साहित्यकारों का सम्मान विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थाना तथा समाज सेवियों का सम्मान जी.पी.एफ.सोसायटी द्वारा किया जाएगा. आप सबने हमारे इस प्रथम आयोजन को सफल बनानें में भरपुर सहयोग दिया इसके लिए हम आपके तहे दिल से आभारी हैं.

कार्यक्रम में बोलते प्रधान संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के संयोजक डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय

कार्यक्रम में प्रारम्भ से अंत तक एक गार्जियन की भूमिका निभाने वाले गुरुतुल्य तारिका विचार मंच व भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के संयोजक सम्माननीय डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय के सहयोग को मैं कभी नहीं भूला सकता. कार्यक्रम में सहयोग के लिए श्री अरूण अग्रवाल श्रोता समाचार, नवलाख अहमद, सहारा टी.वी., राजू द्विवेदी, आंसूतोष वितरक, अनमोल बिस्कुट, लगन कलेक्शन-सिविल लाईन्स, इलाहाबाद, मो. आलम-ऑखों देखी, धीरेन्द-जी.टी.वी, श्रीमती जया 'गोकुल', सौरव कुमार तिवारी सहित उन तमाम लोगों को कोटिशः धन्यबाद दिया जिन लोगों ने साहित्य मेला ०५ को सकुशल सम्पन्न कराने में हमारी किसी भी रुप में मदद की. हम आशा करते हैं हमारे अगले कार्यक्रम में भी स्नेह बनाये रखेगें.

तीसरा सत्र

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

दोदिवसीय साहित्य मेला के तीसरे सत्र में एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. सम्मेलन, राष्ट्रीय प्रतिभा विकास मंच के अध्यक्ष कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी 'चिरकुट इलाहाबादी' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ. जिसमें मुख्य अतिथि भोपाल से आये वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० प्रमोद सक्सेना रहे. सम्मेलन का संचालन तारिका विचार मंच प्रयाग के संयोजक डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय ने और अतिथियों व कवियों का स्वागत विश्व स्नेह समाज के सम्पादक व साहित्य मेला के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. सरस्वती वन्दना पं. राम नाथ त्रिपाठी 'रसिकेश ने और कवि सम्मेलन का श्री गणेश बसन्त लाल तिवारी 'ऋतुराज बसन्त' की रचना से हुआ

कलम गिरवी हुई जिसकी,
मुक्त हो नहीं लिख पाता
स्वार्थ से ग्रस्त मानव को
न्याय पथ दिख नहीं पाता

वरिष्ठ कवि व साहित्यकार 'खरी खरी बातें बातें के सम्पादक डॉ० रामसेवक शुक्ल की सार्थक कविता ने सम्मेलन को गरिमामय बनाया-

अब प्यार की कुछ पंक्तियां
रचकर के देख लें
सद्भाव की अभिव्यक्तियां
गढ़कर के देख लें।

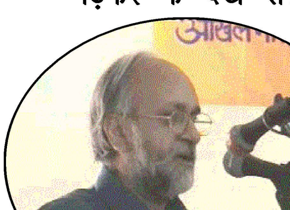

प्रख्यात पत्रकार व कवि अजामिल जी की रचना 'सबसे अच्छी कविता' अपने रुपकों व विम्बों के लिए खूब सराही गयी और डॉ. नरेश गौड़ अशोक की उपदेश प्रधान कविता ने भी श्रोताआें का मन मोह लिया. वरिष्ठ कवि मुनेन्द्र नाथ श्रीवास्तव की रचना इस प्रकार रही-

अँधियारें की बात बढ़ेगी जैसे जैसे
रात बढेगी
सूरज के अवकाश ग्रहण कर जुगुनू
की औकात बढ़ेगी

शब्द वैज्ञानिक महाकवि त्रिफला की रचनाओं ने कवि सम्मेलन में नयी उर्जा का संचार किया और राजेन्द्र तिवारी दुकान जी की हास्य कविता ने श्रोताओं को खूब गुदगुदाया-

अमंगलम गुटका खाद्यं
अमंगलमं मद्य पानमूं।

रमेश राल्ही और सूर्यनारायण सूर तथा अनिल बहोरिक पुरी जैसे नये कवियों का तेवर भी अच्छा रहा. कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की रचना के बाद गीतकार अखिलेश द्विवेदी मंच पर आये और खूब वाहवाही लूटी-

तुम्हारी ऑख में काजल मेरी
ऑखो में पानी है
हकीकत है ये पानी ही हमारी
जिन्दगानी है

रत्नेश द्विवेदी और सौरव कुमार तिवारी के बाद विनय बागी की कविता भी ओजस्वी रही-

हमने जिनको सत्ता सौपी, निकले
लाबरदारों में
संसद पर कब्जा कर डाला
चम्बल के सरदारों ने।

कामयाब बलियावी की गज़ल भी खूब सराही गयी और शंभुनाथ तिपाठी 'अंथुलजी की कविता ने सम्मेलन को ऊचाई प्रदान की-

जग ने लूटा मुझे आज तक पर
मन का आगार बहुत है
क्षणभर के निःस्वार्थ मिलन में
सच कहता हूँ प्यार बहुत हैं

सम्मेलन के संयोजक व संचालक डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने अपना गीत पढ़ा

दर्द पीती रही है स्वयं ही सदा पर
तड़पती रही प्यास में जिन्दगी
दीप इसने अनेकों जलाये यहॉ पर
भटकती रही राह में जिन्दगी।

कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद सक्सेना की कविता ने सबको अंत तक बाधे रखा-

स्नेह आपका यूँ ही मिलता रहे
चिरन्तन
तो सागर में गागर भर लेगा
मेरा प्यासा मन

अध्यक्षीय काव्य पाठ में हास्य व्यंग्य के पुरोधा कवि कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी 'चिरकुट इलाहाबादी ने नारी पूजा सुनकर सबको खूब हॅसाया. आज के सामयिक परिवेश पर कई धारधार रचनाएं देकर चिरकुट जी ने सम्मेलन को सफलता की ओर अग्रसर किया. कवि सम्मेलन के अंत में गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी की ओर से सभी कवियों को काव्य गौरव सम्मान प्रदान किया गया.

इलाहाबाद के वरिष्ठ पत्रकारों का सम्मान

साहित्य मेला ०५ के अंतिम समापन सत्र में इलाहाबाद के इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया के वरिष्ठ पत्रकारों को सम्मानित किया गया. इसमें वरिष्ठ पत्रकार **श्री जियालाल**-यूनीवार्ता, **श्री अरूण अग्रवाल**-श्रोता समाचार, **श्री अजामिलजी**-सीटीटीवी, **श्री सुरेन्द्र सिंह**-सहारा समय, **श्री मुनेश्वर मिश्र**-अमृत प्रभात, **श्री पी.एन. द्विवेदी**-एन.आई.पी, जनाब एस.एस. खान-दैनिक जागरण, श्री स्नेह मधुर - हिन्दुस्तान, के.के. श्रीवास्तव-स्वतंत्र चेतना, श्री रतन दीक्षित, अध्यक्ष न्यूज रिर्पोटस क्लब, श्री विजय प्रकाश श्रीवास्तव, श्री विजय चितौरी, श्री सिद्धनाथ **द्विवेदी** -इण्डियन टीवी.को पत्रकार गौरव सम्मान तथा २१ कवियों को काव्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया. जिनमें डॉ. प्रमोद सक्सेना, कुटेश्वर नाथ तिवारी, डॉ. नरेश गौड़, डॉ. रामसेवक शुक्ल, बसन्त लाल, त्रिफला, राम नाथ त्रिपाठी, अखिलेश द्विवेदी, सौरव कुमार तिवारी मुख्य थे.

समारोह का संचालन कार्यक्रम डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय ने तथा अतिथियों का माल्यार्पण व स्वागत साहित्य मेला सचिव सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. इस अवसर पर पत्रिका के सलाहकार सम्पादक नवलाख अहमद, पत्रिका कार्यकारी संपादिका डॉ० कुसुमलता मिश्रा, गज़ल गायिका श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, कु० श्रर्द्धा वर्मा, रजनीश तिवारी, हिन्दुस्तान के पवनेश पवन आदि उपस्थित थे.

समाज श्री ५००१ नगद से सम्मानित:डॉ० अनवार अहमद

समाज सेवा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ठ योगदान के लिए इलाहाबाद के डॉ. अनवार अहमद को दिया गया. इसमें नगद ५००१ रुपयें दिये जाते हैं. २ नवम्बर १९५६ को डॉ० पीर मोहम्मद तथा माता मिसेज ज़ुबेदा ख़ातून के कोख से इलाहाबाद में जन्मे **डॉ० अनवार अहमद** की शिक्षा- एम.ए. बी.एम.एस., एल.एल.बी पूरी करने के बाद समाज सेवा के लिए पूर्ण रुपेण समर्पित हो गये. जहॉगीर मेमोरियल चैरिटेबल हास्पिटल के निदेशक के पद पर रहते हुए अक्सर गरीबों की सेवा में अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार रहते हैं. जबभी कोई गरीब उनके सामने अपना दुखड़ा रोता है वे दवा तक पैसा माफ कर देते. आप विभिन्न संस्थानों जैसे साईं नाथ पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ होम्योपैथी, जहॉगीर गर्ल्स कॉलेज सहित अनगिनत संस्थाओं के निदेशक के पद को सुशोभित कर रहे हैं. आप कई संस्थाओं के सचिव, इक्जीक्यूटीव मेम्बर, मेम्बर, आजीवन मेम्बर भी हैं.

आप कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत है आप पत्रकारिता में भी अभिरूचि रखते है- आप अपना दोस्त (उर्दू दैनिक),एशिया टुमारो (हिन्दी एण्ड उर्दू साप्ताहिक), ऑल इंडिया यूनानी तिब्बी तरजुमान (हिन्दी एवं उर्दू साप्ताहिक), अनवर-ए-ऑलम (उर्दू दैनिक), बी.आर. टाईम्स (हिन्दी साप्ताहिक),फांउडर एण्ड पूर्व प्रधान संपादकःप्रयागराज टाईम्स (हिन्दी दैनिक),सेक्रेटरी जनरलःकुरान सोसायटी ऑफ इंडिया, लेखक एवं प्रकाशकः सिम्टे-ए- सफर(उर्दू)/हम क्या करें (हिन्दी),निर्माताःजहॉगीर इंटरनेशन (टी.वी.सीरियल 'एक सवाल' एचआईवी/एड्स, दूरदर्शन लखनऊ) २० फ्री आई ऑपरेशन एण्ड चेंकिंग कैम्पस प्रत्येक वर्ष आयोजित, प्रायोजक स्टेट ऑफिसियल एवं हेल्पेज इंडिया

सम्मानित विश्व स्नेह समाज के सक्रिय सदस्य

कार्यकारी संपादक डॉ० कुसुमलता मिश्रा ‘सरल‘ को “स्नेह सम्पादक रत्न” से सम्मानित करते अतिथि गण

उप संपादक रजनीश तिवारी को “स्नेह शिरोमणि” से सम्मानित करते अतिथि गण

साहित्य मेला ०५ की कुछ झलकिंया

देवरिया के संवाददाता सौरव कुमार तिवारी “स्नेह श्री” से सम्मानित करते अतिथि गण

सहारा टीवी इलाहाबाद व्यूरो प्रमुख श्री सुरेन्द्र सिंह का ‘पत्रकार गौरव‘ सम्मान लेते उनके प्रतिनिधि नवलाख अहमद

कवि सम्मेलन एक दृश्य में काव्य पाठ का आनंद लेते अतिथि गण

मुद्दा

इस्लाम और औरत

औरत और मर्द की समस्या में इस्लाम ने जो दृष्टिकोण अपनाया है, वह भी मानव-स्वभाव के पूरी तरह अनुकूल है। अतएव जहां कोई प्राकृतिक आधार मौजूद होता है, वहां यह इन दोनों के मध्य समता स्थापित करता है और जहां प्रकृति अन्दर करना चाहती है, वहां वह भी उनमें अन्तर करता है। मर्द और औरत में इस्लाम जिन अवसरों पर अन्तर करता है, उनमें दो प्रमुख हैं- एक विरासत का बंटवारा और दूसरा खानदान में सर्वोपरिता का मामला।

विरासत

विरासत के बारे में इस्लाम का कथन यह है कि- 'मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है।' और यह बिल्कुल स्वाभाविक और न्यायपूर्ण विभाजन है, क्योंकि आर्थिक खर्चों का सारा बोझ जहां मर्द ही को उठाना पड़ता है। औरत पर अपनी जात के अलावा किसी के खर्च का बोझ नहीं होता. हां, जब औरत ही खानदान की सर्वोपरि हो, तो मामला भिन्न होता है। ऐसी स्थिति में निस्सन्देह औरत ही को परिवार की ज़रूरतें जुटानी पड़ती है, पर यह एक अपवाद है, जो इस्लामी समाज में बहुत कम ही पेश आ सकता है, क्योंकि जब तक औरत का कोई रिश्तेदार मर्द मौजूद हो, चाहे वह रिश्तेदार कितना ही दूर का रिश्तेदार क्यों न हो, रोज़ी कमाने के लिए औरत को घर छोड़ने की ज़रूरत पेश नहीं आती। क्या औरतों के अधिकारों के ध्वजावाहकों के कथनानुसार औरत के लिए यह प्रबन्ध उस पर जुल्म व ज़्यादती जैसा ही है? इन खोखले नारों और तंग नज़री का प्रसार करने वालों से हटकर देखा जाए, तो मूल समस्या गणित का एक सीधा-सादा सवाल है। कुल विरासत का एक तिहाई भाग औरत को केवल अपनी ज़ात के लिए मिलता है, जबकि शेष दो तिहाई मर्द को दिया जाता है, ताकि वह अपन ही बीवी {अर्थात पत्नी}, अपने बच्चों और परिवार की ज़रूरतों को पूरी करे। इससे ज़ाहिर है कि विरासत का बड़ा भाग किसको मिलता है, मर्द को या औरत को? हो सकता है कि कुछ मर्द अपनी सारी दौलत अपनी निजी सुख-सुविधा पर ही लुटा देते हों और विवाह करके घर बसाने पर तैयार न हों, पर ऐसी शक्लें बहुत कम होती हैं। आम तौर से मर्द ही अपने परिवार के तमाम खर्चो का ज़िम्मेदार होता है और वही परिवार के तमाम व्यक्यिों की {जिसमें उसकी पत्नी भी शामिल है} ज़रूरतें पूरी करता है, पर ऐसा करके वह किसी पर एहसान नहीं करता, बल्कि अपना एक नैतिक दायित्व पूरा करता है। अगर कोई औरत जायदाद की मालिक हो तो उसका पति उसकी मर्ज़ी के बिना उससे यह जायदाद नहीं ले सकता। यह नहीं; बल्कि उस औरत के सारे खर्चों का बोझ भी मर्द ही को उठाना पड़ेगा। अगर पति पत्नी को खर्चा-पानी देने से इन्कार कर दे या अपनी आमदनी के लिहाज़ से उसको कम खर्च दे तो वह अदालत में उसके खिलाफ मुक़दमा चालू करके उससे खर्चा-पानी वसूल कर सकती है वरना उससे अलग हो सकती है। इस्लाम के खिलाफ मात्र आरोप है कि इस्लाम विरासत में से औरत को मर्द के मुक़ाबले में थोड़ा या अपर्याप्त भाग देता है, क्योंकि मर्द की आर्थिक ज़िम्मेदारियां ही ऐसी हैं कि विरासत में सें उसको औरत के मुक़ाबले में दो गुना हिस्सा मिलना ही चाहिए।

> - मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है।'
> - दौलत कमाने के मामलें में इस्लाम मर्द और औरत में कोई अन्तर नहीं करता। इस्लाम में दो औरतों की गवाही एक मर्द की गवाही के बराबर है.
> - इस्लाम आपसी संघर्ष और होड़ के बजाए मर्द और औरत के बीच प्रेम, समझ-परख और स्थायी सहानुभूति को पारिवारिक जीवन का आधार बनाना चाहता है।

इस्लामी कानून का मुलाधार

विरासत के विभाजन में भी इस्लाम ने ऐसा ही अनुपात बना रखा है। इस सिलसिले में जो क़ानून मूलाधार की हैसियत रखता है, मानवता इससे अधिक न्यायपूर्ण क़ानून अब तक मालूम न कर सकी। 'लिकुल्लिन हस-ब हाजति ही' अर्थात हर आदमी को उसकी ज़रूरतों के मुताबिक़ दिया जाए, जबकि आदमी की ज़रूरतों का पैमाना, उसकी वे सामाजिक ज़िम्मेदारियां होती हैं जो उसको निभानी पड़ती हैं, लेकिन जहां तक दौलत कमाने का ताल्लुक़ है, इस्लाम मर्द और औरत में कोई अन्तर नहीं करता, न मज़दूरी में उनके बीच कोई अन्तर करता है, न व्यापार के रूप में लाभ के बंटवारे में भेदभाव सही समझता है और न ज़मीन से हासिल होने वाली आमदनी के मामले में उनमें से किसी के साथ कोई विशिष्ट व्यवहार करता है, क्योंकि इन मामलों में इस्लाम दोनों वर्गो

में पूर्ण समता के नियम पर अमल करता है और उनकी मेहनत के अनुसार उन्हें समान मुआवज़े देता है। इस मामले में यह किसी के साथ भी ज़्यादती पसन्द नहीं करता। मुस्लिम जनता में आम तौर पर पाया जाने वाला यह विचार जिसको इस्लाम-विरोधी एक सोची-समझी योजना के अन्तर्गत फैलाते नज़र आते हैं कि इस्लाम की निगाह में औरत मर्द के मुक़ाबले में आधे-मुआवजे की हक़दार है, पूर्णतः ग़लत है।

गवाही का क़ानून

इस्लाम में दो औरतों की गवाही एक मर्द की गवाही के बराबर मानी गई है. इसका अभिप्राय एक औरत आधे मर्द के बराबर है, नहीं बल्कि यह एक बुद्धिमत्तापूर्ण क़दम है, जिसका उद्देश्य हर संभव तरीक़े से क़ानूनी गवाही को ग़लतियों और खराबियों से बचाए रखना है, चाहे वह गवाही इस्तिग़ासे के हक़ में हो या उसके खिलाफ़। अपने स्वभाव की दृष्टि से औरत अति भावुक होती है. ऐसे में यह खतरा रहता है कि वह मुक़दमे की बातो ंको कड्ड-मड्ड कर दे, इसलिए उसकी गवाही की हैसियत मर्द से कम हैं.

यह भी बिल्कुल संभव है कि अपराधी कोई युवक मर्द हो, जिसको देखकर महिला गवाह की ममता जाग जाए और यह जान-बूझकर या अनजाने ही उसको बचाने की कोशिश में ऐसी गवाही दे दे जिसका वास्तविकता से दूर का भी सम्बन्ध न हो। पर जहां दो औरतें एक ही समय में अदालत में गवाही दे रही हों, वहां पर इन दोनों का ऐसी ग़लती में फंसा रहना और ग़लत गवाही देना असंभव नहीं है। ऐसी स्थिति में अनुमान यही कारण है कि अगर इनमें से कोई एक हक़ीक़त के बारे में ग़लतफ़हमी की शिकार होगी, तो दूसरी औरत उसे सुधार देगी। इस अवसर पर यह व्याख्या भी मुनासिब जान पड़ती है कि यदि कोई महिला गवाह औरतों के रोगों के विशेषज्ञों के तौर पर अदालत में पेश हो, तो कोई और गवाही न होने के बावजूद उसकी अकेली गवाही भी विश्वसनीय समझी जाएगी।

परिवार का मुखिया

जहां तक परिवार के मुखिया होने का संबंध है, तो इसकी शक्ल ऐसी है इसमें केवल वही व्यक्ति निवृत्त हो सकता है, जिसमें प्रशासन की क्षमता हो. परिवार एक मर्द, औरत और बच्चों के संयुक्त और उससे पैदा होने वाली ज़िम्मेदारियों का नाम है। दूसरी सामाजिक संस्थाओं की तरह खानदान को भी एक ज़िम्मेदार मुखिया की ज़रूरत होती है, जिसके न होने पर पारिवारिक जीवन बिखराव और अन्ततः तबाही का शिकार हो सकता है। परिवार के मुखिया के सिलसिले में तीन शक्लें हो सकती हैं-

१. एक यह कि मर्द परिवार का मुखिया हो,

२. दूसरे यह कि औरत उसकी मुखिया हो, और

३. तीसरे यह कि मर्द और औरत दोनों एक ही समय में परिवार के मुखिया हों।

तीसरी शक्ल तो ज़ाहिर है कि विषय से बाहर कही चीज़ है, क्योंकि हमारा तजुर्बा हमें बताता है कि जहां दो मुखिया हों, वहां सिर से कोई मुखिया न होने की हालत से भी अधिक अव्यवस्था और विकटताएं जन्म लेती हैं। ज़मीन और आसमान की रचना की तरफ़ इशारा करते हुए कुरआन में इर्शाद होता है- 'ज़मीन या आसमान में यदि अल्लाह के सिवा और उपास्य होता, तो ज़मीन आसमान, दोनों नष्ट-विनष्ट हो जाते, तो हर खुदा अपनी रचना का जुदा कर लेता और एक दूसरे पर चढ़ाई करता।' {अल-अंबियाः२१}

'तो हर खुदा अपनी मख्लूक़ को जुदा कर लेता और एक दूसरे पर चढ़ाई करता।' {अल-मूमिनूनः६१}

अगर इन काल्पनिक खुदाओं का यह हाल है तो सोचिए कि इन इंसानों का क्या होगा, जो इतने ज़ालिम और बेइंसाफ़ हो गये हैं।

एक प्रश्न

इस प्रकार हमारे सामने केवल दो शक्लें शेष रह जाती हैं, जिन पर वार्ता करने से पहले हम पाठकों के सामने एक प्रश्न रखते हैं- अपनी क्षमताओं की दृष्टि से परिवार का मुखिया बनने के लिए औरत और मर्द में अधिक उपयुक्त है? क्या बौद्धिक क्षमताओं का स्वामी मर्द इसकी ज़िम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभा सकता है या वह औरत, जिसकी विशेषता ही उसकी भावुकता है? ज्यों ही हम इस समस्या पर विचार करते हैं कि अपनी मानसिक क्षमताओं और बलवान शरीर के कारण मर्द इस क़ाबिल है कि परिवार का मुखिया बने या औरत जो अपने स्वभाव की दृष्टि से अति भावुक तथा उत्तेजनायुक्त होती है और क़दम उठाने जैसी मर्दो की विशेषता से खाली है तो समस्या स्वतः हल हो जाती है। स्वयं औरत भी किसी ऐसे मर्द को पसन्द नहीं करती, जो कमज़ोर हो और वह उसको आसानी से दबा ले। ऐसे मर्द से वह घृणा करती है और कभी उस पर विश्वास नहीं करती। औरत की यह कार्य-विधि उस मानसिक रवैए के बचे-खुचे प्रभावों का नतीजा हो सकता है, जो गत कई सौ सालों के प्रशिक्षण और विरासत के तौर पर उसको मिला है, पर बहरहाल यह सही है कि औरत आज भी उस मर्द में आकर्षण पाती है जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, तथा दृढ़ हो। यह सच्चाई अमेरिकी औरतों की ज़िन्दगियों में पूरी तरह देखने को मिलती है। अमेरिकी औरत को मर्द के साथ बराबर के अधिकार प्राप्त हैं और उसकी आजाद हैसियत को भी वहां माना जा चुका है, पर इसके

बावजूद मर्द से हार कर उसे खुशी होती है। वह ऐसे ही मर्द से मुहब्बत करती है और हर तरह से उसका दिल जीतने की कोशिश करती है। वह मर्द की सुदृढ़ देह और चकली छाती को देखकर प्रभावित होती है और जब शारीरिक व्यक्ति के मामले में उसे अपने से कहीं ज़्यादा मज़बूत पाती है, तो अपने आपको उसके हवाले कर देती है।

औरत को परिवार की सरदारी का शौक़ सिर्फ उसी वक्त तक रह सकता है, जब तक उसके औलाद नहीं हो जाती और उसको उसकी शिक्षा या दीक्षा की कोई चिन्ता नहीं होती। बच्चों की मौजूदगी में इन अन्य बढ़े हुए कर्त्तव्यों के लिए उसके पास समय ही नहीं बचता, क्योंकि मां की हैसियत से उसके जो कर्त्तव्य बन जाते हैं, वे कुछ कम कठिन और कम समय चाहने वाले नहीं होते।

पारिवारिक जीवन

इसका यह अर्थ बहरहाल नहीं है कि घर में औरत मर्द की गुलाम और वह उसका जाबिर मालिक बनकर रहे, क्योंकि घर की सरदारी कुछ ऐसे कर्त्तव्यों और ज़िम्मेदारियों का नाम है, जिन्हें केवल इसी तरह पूरा किया जा सकता है, जबकि पति और पत्नी के बीच प्रेम और सहयोग का वातावरण स्थापित हो। घरेलू ज़िन्दगी की कामियाबी के लिए आपसी समझ-परख और स्थायी सहानुभूति ज़रूरी गुण है। इस्लाम आपसी संघर्ष और होड़ के बजाए मर्द और औरत के बीच प्रेम, समझ-परख और स्थायी सहानुभूति को पारिवारिक जीवन का आधार बनाना चाहता है। कुरआन मजीद में है-

'अरे इन औरतों के साथ खूबी के साथ गुज़र-बसर करो।'{अन-निसाः१६}

और पैग़म्बर का फ़रमान है कि-

'तुममें सबसे अच्छा वह है, जो अपने घरवालों के साथ अच्छा है।' {तिरमिज़ी}

मानो हुज़ूर {सल्ल०} ने आदमी के चरित्र को नापने के लिए जो पैमाना मुक़र्रर किया, वह अपनी पत्नी के साथ उसका व्यवहार है और सच तो यह है कि यह बहुत ही सही पैमाना है, क्योंकि कोई आदमी उस समय तक अपनी पत्नी से दुर्व्यवहार नहीं कर सकता, जब तक वह आध्यात्मिक रूप से रोगी न हो और उसमें नेकी और अच्छाई का कोई भाव ही बाक़ी न रहा हो या वह किसी मानसिक उलझन का शिकार न हो.

समाज

आपसी मतभेद और बातचीत

मधुर से मधुर और आदर्श रिश्तों में भी कभी न कभी मतभेद अवश्य पैदा होता है. मगर ये लोग आपस में बातचीत कर अपने मतभेदों को सुलझा लेते हैं और तनाव पैदा नहीं होने देते. इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि सर्वप्रथम आप एक दूसरे से बातचीत का रास्ता खुला रखें. बेझिझक खुले मन से अपनी बात एक दूसरे से कहें. मगर बातचीत का मतलब झगड़ा नहीं होना चाहिए. मधुर वातावरण में बातचीत होनी चाहिए. एक दूसरे पर लांछन लगाने की बजाय आप खुले मन से हर बात का सही मूल्यांकन करें और उसके बाद उसे समझते हुए समझौता करें. हर बात पर झगड़ा फसाद खड़ा करना उचित नहीं है. शांत मनसे एक दूसरे से बातचीत करें. अपने जीवनसाथी के दृष्टिकोण को समझें और उसकी भावनाओं को समझते हुए उनकी कद्र करते हुए एक समझौता करने की चेष्टा करें.

कई बार आप सही और उचित बात कहते हैं, मगर क्य हर बार उसका यही अर्थ निकलता है? केवल सही बात कह देने से काम नहीं चलता आप किस भाषा में अपनी बात कहते हैं आपकी आवाज कितनी मधुर है, आपके चेहरे के भाव क्या हैं? आपके हावभाव, आप के हाथ, आपका शरीर किस तरह से उस बात को सहारा देते हैं. इन सब बातों पर भी यह निर्भर करता है कि आप मधुर से मधुर और आदर्श रिश्तों में भी कभी न कभी मतभेद अवश्य पैदा होता है.

मगर ये लोग आपस में बातचीत कर अपने मतभेदों को सुलझा लेते हैं और तनाव पैदा नहीं होने देते. इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि सर्वप्रथम आप एक दूसरे से बातचीत का रास्ता खुला रखें बेझिझक खुले मन से अपनी बात एक दूसरे से कहें. अपनी आशंकाएं और अपने मत को व्यक्त करें. मगर बातचीत का मतलब झगड़ा नहीं होना चाहिए. मधुर वातावरण में बातचीत होनी चाहिए. ठीक कह रहे है या नहीं आपके हावभाव आपकी आंतरिक इच्छाओं को उजागार करते है. जब आप अपने जीवनसाथी से बातचीत करें तो इन सब हावभाव का ध्यान रखें और अपनी बात प्यार से मधुर ढंग से उचित हावभाव के साथ कहें, ताकि वह उसी भाव में समझी जा सके. जब कोई समस्या अत्यंत कठिन हो और जिसका हल दिखलायी न दें. तब आपको यह अधिकार है कि उस समस्या के समाधानके लिए आप आवश्यकतानुसार अन्य भावों को प्रदर्शित करें, ताकि आप सफलतापूर्वक अपनी बात कह सकें.

हास्य कवियों के चेहरे पर,मिलती नहीं लालियॉं,
नारा रहती है पत्नी, खुश रहती हैं सालियॉं।
कैसी तकदीर लिये आते हैं ये हास्य-कवि,
मंचों पर तो तालियॉं पर घर में मिलती हैं गालियॉं। **चंदर राकेश**, मुजफ्फरपुर

परीक्षा

डॉ0 सुनील कुमार अग्रवाल

परीक्षा कक्ष में ज्यों ही नवजात शिशु की रोने की मध्यम आवाज सुनाई दी तो परीक्षार्थियों सहित मेरा ध्यान कक्ष के कार्नर पर बैठी युवती की ओर गया, उसकी गोदी में गद्‌दी से लिपटा एक नन्हा शिशु था जो उसकी गोदी में कसमसा कर किलकारी मार रहा था, अपनी लम्बी सेवा अवधि में कक्ष परिप्रेक्षक की ड्यूटी करते हुए यह पहला वाकया था जब मैंने यूँ एक नादान, अबोध बच्चे सहित परीक्षा देते हुए किसी परिक्षार्थिनी को देखा था. उस युवती का नाम शाहीन था और नाम के अनुरूप वह बड़ी शालीन और व्यवहार मृदुल थी.

युवती को इस स्थिति का ज्ञान भी था कि यूँ बच्चे के साथ परीक्षा कक्ष में उसकी उपस्थिति के कारण व्यवधान होगा और इसीलिए वह उस बच्चे को बहलाने की असफल चेष्टा कर रही थी. शायद वह बच्चा उसी युवती का था क्योंकि जब उसने देखा कि बच्चा मुँह में दूध की बोतल लगाने पर भी चुप नहीं हो रहा हैं तो उसने तनिक झिझकते हुए उसे अपने ऑचल के दूध को पिलाने का प्रक्रम किया. कुछ देर में बच्चा अपनी मॉ का दूध पीकर शांत हो गया और उनींद में आ गया. उस दिन मौसम भी खुशगवार था अतः बच्चे को नीद भी आ गयी.

भारतीय नारी सृष्टि के प्रादुर्भाव से ही अनन्त गुणों की आगार रही हैं जिसमें धरती सा धैर्य और क्षमा, सूर्य सी तेजस्विता, सिंधु सी गम्भीरता चन्द्र सी शीतलता और पर्वत सी दृढ़ता का गुण होता हैं वह वात्सल्य, करूणा, दया ममता और प्रेम की प्रतिमूर्ति होती हैं. भारत भूमि वीरांगना लक्ष्मीबाई के आदर्श से ओत-प्रोत हैं जिसने अपनी संतान को पीठ से बॉधकर रणभूमि में ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लिया और उनके छक्के छुड़ा दिये. उस युवती को देखकर ऐसे ही कुछ भाव मेरे मन-मस्तिष्क को हर्षित करने लगें.

वह युवती बच्चे को गोंद में लिए हुए ही अपनी उत्तर पुस्तिका में असहजता से लिख रही थी. मैं देख रहा था कि इस तरह यूँ लिखने में उसे खासी परेशानी भी हो रही थी. मैं उस युवती की मनः स्थिति बखूबी समझ सकता था. अतः मैंने उस युवती की सीट के समीप ही द ` ा कुर्सियों को आम्ने-साम्ने लगाकर चिपका कर रख दिया और उन्हें पालने का रूप दे दिया. उसके बच्चें को सुलाने व्यवस्थ कर दी. वह युवती लिखते हुए ही कनखियों से देखकर मेरे जतन को समझ कर खुश हुई और उसने बिना कुछ बोले अपने शिशु को गद्‌दी बिछा कर इत्मीनान से लिटा दिया और अधिक तत्परता से उत्तर पुस्तिका में लिखने लगी. उसके चेहरे पर संतोष का भाव देखकर मुझे भी आत्मीय संतोष हुआ.

मेरे सहानुभूतिपूर्ण भाव को देख कर बिना मेरे प्रश्न पूछे ही उसने स्वयं धीरे से मुझसे कहा “सर! .....पहले पेपर में इसे पड़ोस में छोड़ कर आई थी तो इसने रो...... रोकर बुरा हाल कर लिया.... और अपनी सॉस भी खीच लीं थी...... अतः आज परीक्षा देने आते समय इसे अपने साथ ले आई...”

उसकी यह बात सुनकर मेरी सहानुभूति उसके प्रति और बढ़ गई. फिर मैंने उससे प्रति प्रश्न किया.

“....क्यों....? क्या तुम्हारे घर पर .. . कोई अन्य नहीं है जो इस बच्चे को संभाल सकता.....?” मेरी बात सुनकर वह कुछ नहीं बोली केवल उसकी ऑखें छलछला आईं. उसकी मौन वाणी ने उसकी अर्न्तव्यथा को स्वयं व्यक्त कर दिया था. अब उसके पास खड़े होने एवं उसे कुरेदने की मुझमें न हीं हिम्मत थी और न हीं वह अवसर उचित था. अतः मैं अपनी सीट पर आकर परीक्षा संबंधी अन्य कार्य निबटाने लगा. मेरे जेहन में अनेक प्रश्न प्रतिप्रश्न आ जा रहे थें कि क्या यह वैधव्य की मारी हैं? किन्तु मैंने देखा कि उसकी मॉग में सिदूर, माथे पर बिंदिया और चूड़ी आदि सुहाग चिन्ह मौजूद हैं. क्या यह दुनिया में परिजनों से दूर एकाकी हैं. फिर अगले ही क्षण सोचा कि क्या-क्या ऊल जलूल सोचने लगा मैं.... इस संसार की व्यथा-कथा तो आद्यान्त है इनसे हमारा क्या वास्ता. हम तो वस अपना कर्म-कर्तव्य निष्ठापूर्वक निभाते रहें यही पर्याप्त हैं.

लगभग आधा घंटा बाद बच्चा पुनः सुबकने लगा. यद्यपि बच्चा मात्र डेढ़ महीने का मासूम था और उसका रूदन स्वर भी घुटा-घुटा सा था किन्तु परीक्षार्थियों के लिए वही कोतूहल था. विद्यार्थियों में थोड़ा लड़कपन भी होता हैं संसाार की ऊँच नीच का सम्यक ज्ञान नहीं होता अतः एक दो परीक्षार्थी दबे स्वर में बोले “सर!..... यह बच्चा रो रहा है जिससे डिस्टर्व हो रहा हैं....”

अब यह मेरे लिए संकट एवं परीक्षा की घड़ी थी क्योंकि संवेधानिक दायित्व कहता था कि मैं युवती से कहूँ कि बच्चे को बाहर बरामदे में जाकर चुप करा कर लाये और मानवीय धर्म कहता था कि इस तरह तो इस युवती का समय खराब होगा और वह परीक्षा कैसे दे पायेगी?

वक्त की नजाकत को समझते हुए मैं उन परीक्षार्थियों से धीरे-धीरे संयत स्वर में समझाते हुए बोला जो उस बच्चे की उपस्थिति पर एतराज कर रहे थे-

“देखिये!....बच्चा छोटा, नादान और नासमझ है. इस बच्चे को संभालने हुए परीक्षा देने में इन्हें स्वयं अत्यंत परेशानी

हो रही हैं. आप लोग यह भी समझ सकते होंगे कि यह अत्यंत मजबूरी में ही यूँ इसे अपने साथ लाई हैं. अतः इस उत्पन्न परिस्थिति से समझौता कर आप शांत भाव से परीक्षा दें. बच्चे के स्वर पर ध्यान न देकर अपने चित्त को परीक्षा में एकाग्र करें. यह परीक्षार्थी मजबूर हैं. बच्चा नादान है किन्तु हम कोई भी नादानी वाला कार्य न करें." मेरी दलील सुनकर बच्चे शांत हुए और युवती आश्वस्त हुई. बच्चा भी कुछ ही देर में पुनः चुप होकर अपने पैर पर अंगूझा अपने मुँह में डालकर चूसने लगा.

युवती प्रश्न पत्र को शीघ्रता से हल करने लगी उसके मन का ग्लानि भाव भी उसकी तत्परता से परिलक्षित हो रहा था. इस बीच मैंने अपने बराबर वाले कक्ष क कक्ष निरीक्षक को बुलाकर युवती के यूँ परीक्षा देने का प्रकरण सुनाया उस साथी परिप्रेक्षक ने अपनी सहयोगिनी महिला परिप्रेक्षक को बात दुहराई तो वह मेरे कक्ष में आकर मुझसे धीरे से बोली "भाई साहब!....यदि अब इस परीक्षार्थिनी युवती का बच्चा परेशान करे तो आप कृपया मुझे बुलवा लें.... कुछ देर इसके बच्चे को मैं संभाल लूंगी. .. हम यूँ तो किसी का कुछ उपकार कर नहीं पाते हैं यदि हमारे द्वारा किसी का कुछ कार्य सम्पन्न हो जाये तो दुआ भी मिलेगी और तोष भी."

मैं अपनी साथी प्राध्यापिका की सहृदयता से प्रभावित हुआ और वास्तव में अगली बार जब बच्चा रोया तो वह उसे बाहर ले जाकर संभालने में काफी मदद की. इस प्रकार उस मजबूर और बेबस युवती की परीक्षा सम्पन्न हो गई. यह परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पूरक परीक्षा थी और वह युवती समीप के कस्बे से परीक्षा देने आई थी. हमारे महाविद्यालय को कई समीपवर्ती महाविद्यालयों का संयुक्त परीक्षा केन्द्र बनाया गया था.

मैं सोचने लगा कि क्या इस युवती को मजबूर कहना उचित हैं? जिसमें इतनी दृढ़ इच्छा, संकल्प शक्ति और साहस है कि वह इस स्थिति में परीक्षा दे रही है वह मजबूर नहीं वरन् अर्न्तमन् से मजबूत हैं. प्रथम दृष्ट्या वह अबला आन्तरिक रूप से कदापि दुर्बल नहीं है वह आत्म बल की स्वामिनी, सफल संरक्षिका और श्रद्धामयी हैं.

यह परीक्षा केवल परीक्षार्थियों एवं परीक्षार्थिनी की परीक्षा ही नहीं थी वरन् मानवीयता की परीक्षा की घड़ी भी थी और मानवीयता इस परीक्षा में यकीनन सुफल हुई.

(स्वप्निल सदन,मुरादाबाद, उ.प्र.)

विश्व स्नेह समाज के नियम

१.विश्व स्नेह समाज प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित कर डाक में डाला जाता हैं. यदि किसी सदस्य को महीने के अन्त तक न मिले, तो द्वितीय प्रति हेतु तत्काल सुचित करें.

२.पत्रिका की सहयोग राशि संपादक, विश्व स्नेह समाज, एल.आई.जी.-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा इलाहाबाद, उ.प्र. के पते पर धनादेश अथवा विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद, के नाम से बनवाए गये बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

३.पत्रिका के लिए लेख तथा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ही ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. फोटो अथवा कार्बन कापी स्वीकार्य नहीं हैं. प्रकाशन सामग्री पत्रिका के अनुकूल होनी चाहिए. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें.

४. किसी पर्व अथवा अवसर विशेष सामग्री हमें अवसर से डेढ़ दो माह पूर्व भेजें.

५.रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकट लगा लिफाफा संलग्न अवश्य करें, अन्यथा अस्वीकृति की दशा में रचना वापस करना सम्भव नहीं होगा.

६.पत्र व्यवहार करते समय अथवा धनादेश भेजते समय अपनी सदस्य संख्या अथवा पत्रांक संख्या का उल्लेख अवश्य करें. जो पते के ऊपर लिखी होती हैं यह पता प्रत्येक अंक के पीछे चिपका होता हैं.

विश्व स्नेह समाज सदस्यता शुल्क

वार्षिक सदस्यता : रु0 35/ विशिष्ट सदस्यः रु0 100/–
द्विवार्षिकः रु0 70/– पंचवर्षियः रु0 170/–
आजीवन सदस्यःरु0 1100/– संरक्षक सदस्य : रु0 5000/–

1.विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाता हैं.

2. आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाता हैं तथा उपहार स्वरुप पुस्तकें भेजी जाएगी.

3.संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष तीन विज्ञापन 2/3 का निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा. तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

द हंगामा इंडिया

अवैध संबंध के चलते गयी पांच जाने

आखिरी जान सगे बेटे ने मां को गोली मार कर ली

आज समाज में इतनी विकृति आ गयी है कि प्रत्येक दिन अवैध संबंध के चलते होने वाली हत्याओं का सिलसिला रुकने का नाम हीं नहीं लेता. यह प्रगतिशील समाज का धोतक है या....? यह तो कहना मुश्किल हैं. लेकिन यह तो कटु सत्य है कि आज अवैंध संबंध समाज के लिए एक कोढ़ साबित हो रहे हैं. इस पर विचार करना होगा.

१६ जून की रात हबीबपुर, झूसी, इलाहाबाद निनवासी बिटोला की उसके बड़े बेटे जितेन्द्र ने गोली मारकर हत्या कर दी थी. पुलिस उसकी तलाश में १७ जून को नबावगंज स्थित उसके पैतृक गांव में दबिश दी. वहां से पुलिस को पता चला कि करीब दस साल पहले अवैध संबंध चलते उसके पति वासुदेव की हत्या कर दी गई थी. एस.ओं. आर.बी सिंह ने बताया कि बिटोला के अवैध संबंध गांव के बीपासी से हो गए थें. इस बात का पता उसके पति को चला तो उसने विरोध किया. रास्तें में बाधा बनने के कारण बीपासी ने उसकी हत्या कर दी. इसी विवाद के चलते कुछ रोज बाद बिटोला के देवर की भीा हत्या कर दी गई. इस बात से क्षुब्ध छोटे देवर ने साल भर बाद बीपासी की हत्या कर दी. इसी वर्ष बिटोला की आशनाई के चलते उसके भाई को भी जान से हाथ धोना पड़ा. इसके बाद से वह अपने चार बच्चो के साथ हबीबपुर आकर रहने लगी. वहां भी उसकी आदत पहले जैसे ही रहीं. पुलिस के मुताबिक पड़ोस के वृ; के साथ अवैध संबंध के चलते बेटे जीतेंन्द्र ने उसकी हत्या कर दी.

रजि. ☎211522

एच.पी.जी.डी. चिल्ड्रेन अकादमी

(श्री हरिहर प्रसाद गोदावरी देवी)

नन्दना वार्ड, पश्चिमी, बरहज, देवरिया

कक्षाए: नर्सरी से कक्षा अष्टम तक

कम्प्यूटर शिक्षण, प्रेक्टिकल, इंटरनेट की सुविधा

प्रबंधक
विजय कुमार जायसवाल

प्रधानाचार्या
श्रीमती निरुपमा जायसवाल

सगे मामा ने किया रिश्ते को कलंकित

हिम्मतगंज, इलाहाबाद में अपनी ननिहाल में रह रही एक लड़की के साथ उसके नाना और दो मामा ने दुष्कर्म किया. तीनो पिछले कई वर्षो से लड़की को ध ामका कर उसके साथ दुष्कर्म कर रहे थें. कुछ दिनों पहले जब इस मामले की जानकारी लड़की के भाई को हुई तो उसने विरोध किया, जिस पर उसे मारा-पीटा गया. लड़की का पिता मामले की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए कई बार स्थानीय थाना क्षेत्र खुल्दाबाद में गया लेकिन उसे टरका दिया गया. १८ जून को उसने डी.आई.जी से मुलाकात कर मामले की जानकारी दी तो उनके निर्देश पर देर रात खुल्दाबाद थाने में रिर्पोट दर्ज कराई गई. कीडगंज निवासी लड़की के पिता का कहना है कि उनकी पत्नी का देंहात सात साल पहले हो गया था. इसके बाद से उनकी लड़की अपने ननिहाल में ही रहती थी. सात सात पहले उनके ससुर ने लड़की को नशीला पदार्थ खिलाकर उसके साथ मुॅह काला किया. इसके बाद उनके दोनों साले भी दुष्कर्म करने लगें. लड़की को उसके पिता व भाई की हत्या की धमकी दी जाती थी. राज लड़की के भाई को नाना व अपनी बहन को आपत्ति जनक अवस्था में देखने से खुला.

शादी करके जब से शौहर हो गया,
इक अदद बीबी का नौकर हो गया
बाप थे मेरे पुलिस इन्सपेक्टर,
और मैं नेता फटीचर हो गया

मो० मुइनुद्दीन 'अतहर'

हटियन सेनुरा महंग भये बाबा, चुनरी भई अनमोल।

लोक संस्कारों में विवाह संस्कार सर्वाधिक आकर्षक रोचक और महत्वपूर्ण माना जाता है। देश के विभिन्न भागों में अनेक रीतियां, रस्में और पद्धतियां हैं। लेकिन इस संस्कार की रोचकता सर्वत्र एक सी ही है। हालांकि शास्त्र सम्मत बहुत थोड़े से ही कार्य संम्पादित होतें है। यही कारण है कि जातिगत, समाजगत और स्थानगत अनेकानेक भेद पाये जाते हैं। पर्वतीय अंचलों मे कुछ और रस्में है तो मैदानी इलाकों मे कुछ और तथा आदिवासी क्षेत्रों मे कुछ और तरह की रस्में है। लेकिन हर रस्म का अपना एक अलग आकर्षण है। हर रस्म अपने तरफ देखने वालों को खीचती है, आकृष्ट करती है जोड़ती है। अपरिचित व्यक्ति भी बहुत सहज होकर सब कुछ देखता समझता है। जितनी ही रस्में है उतने ही लोकाचार हैं उतने ही गीत भी इस संस्कार से जुड़े हुए हैं। वह खोजने के अभियान की मंगलकामना से लेकर बिदाई तक गीत ही गीत भरे हुए है और सबकी अलग अलग धुनें भी हैं, अलग अलग संवेदनाएं भी है।

द्वारचार की रस्म से लेकर कोहबर तक की यात्रा गीतों की छांह-छांह ही संम्पन्न होती हैं। अवधी भोजपुरी और बुदेंलखण्ड के इलाकों में यह संस्कार कहां कैसे सम्पन्न होता है। और कब कहां कौन कौन से गीत गाये जातें हैं-उसकी एक छोटी सी झलक प्रस्तुत है।

पुराने जमाने की महगांई एवं चीजों के आभाव को व्यक्त करने वाले तमाम विवाह गीत प्रचलीत हैं जो उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के गवाह हैं। एक बेटी पिता से कहती है- हे बाबा बाजार में सिंदूर महंगा हो गया है और चुनरी तो किसी भी कीमत पर उपलब्ध नही है। हे बाबा ! इसी सिंदूर अर्थात विवाह हो जाने के कारण आज मै तुम्हारे देश को छोड़ कर ससुराल जा रहीं हूँ। सिन्दूर का महंगा होना तथा चुनरी का अनमोल होना दोनो गरीब पिता के बेटी के बाधक बने हुए हैं। पिता की गरीबी, अभाव तथा बेटी के घर छोड़ने के गीत में करूण की अक्षय अटूट धरा ले कर फूट पड़ता हैं-

'हटियन सेनुरा महंग भये बाबा!
चुनरी भईल अनमोल।
यहिं रे सेनुरबा के कारन बाबा!
छोड़ेउं मैं देस तोहारा।'

बेटी के विवाह के लिए पिता द्वारा वर खोजने का संकट तथा अधिक दहेज मागने के कारण वर मिलने में कठिनाई आदि के अनेक प्रसंग लोक गीतों मे भरे पड़े हैं जिसे सुन कर हृदय द्रवीभूत हो उठता है। एक पिता अपनी पुत्री से कहता है- हे बेटी! तुम्हारे लिए मैने योग्य वर काशी बनारस और सरूवार (सरयूपार - प्रदेश - वर्तमान गोरखपुर तथा बस्ती जिला) में खोजा किन्तु तुम्हारे लायक योग्य और सुन्दर वर मुझे कही नही मिला। अतः हे बेटी! अब तुम्हे कुमारी ही रहना पड़ेगा? बाप की विवशता, असमर्थता एवं खीझ इस विवाह गीत में व्यक्त हुआ है-

'हेरेउं कासी हेरेउं बनारस
हेरेउं देश सरूआरि।
तोहरी जोग बेटी! सुधर वर नाही
अब बेटी रहबू कुंवारी।

पूरब और पश्चिम दिशा में सागर (सरोवर)फैला हुआ है जिसमें कमल लहरा रहें हैं उसी सागर में दूर देश से आकर दूल्हा राजा धोती पछार रहें हैं। संयोग से उसी जलाशय में स्नान करती उनकी होने वाली दुल्हन भी मिल जाती है। लड़की अपरिचय की अवस्था मे प्रश्न कर बैठती है। तुम किसके पौत्र। तुम किसके बेटे हो? और तुम्हारी बहन का क्या नाम है? किस चीज का व्यापार करने चले हो और किसके सागर मे नहा रहे हो? तब वह अपना पैत्रिक परिचय देकर बताया कि मैं सिन्दूर का व्यापार करने चला हूँ। इतना सुनते ही प्रसन्न युवती अपने भावज से आकर कहा कि जिस वर को आपने नगर नगर ढुढ़वाया था वही मेरे सागर में नहा रहा है। इसके बाद वर को बुलवाया जाता है किन्तु भाभी का अंतिम वाक्य *'लइ जाउ बैरनि हमारी'* ननद के स्वत्व एवं सम्मान पर गहरी चोट करता है। साथ ही पुराने समय से चले आ रहे ननद-भाभी के आपसी बैर भाव को भी उजागर करता है- 'पुरब-पछिम कर सागर बाबा! पुरइन हालर लेइ।

ते सगरे दुलहे धोतिया पछारइं, दुलहिन पूछइ एक बातें
केकर अहउ तू नतिया अउ पुतवा, कबने बहिनिया के भाइ।
कबने बनिजिया चलेउ वर सुन्दर केकरे सगरे नहात।
आवउ ननदोइया पलंग चढ़ि बैठउ कूंचउ महोवा क पान।
गउँआ बाहेर होइके उड़िया फनावौ लइ जाउ बैरनि हमारि'।

हमारे समाज में बाल विवाह की कुरीति प्राचीन काल से चली आ रही है। जिसके कई राजनैतिक तथा सामाजिक कारण रहे हैं। इतिहास जिसका आज भी साक्षी है। किन्तु आगे चलकर एक कुरीति बन गया।

शैशव और बाल्यावस्था की दहलीज पर पांव रखती एक छोटी बालिका मां की गोंद में सो रही थी। अचानक बाजा की आवाज सुनकर उसकी नींद टूट जाती है। बेटी मां से पूछती है कि किसके दरवाजे पर बाजा बज रहा है तथा किसका विवाह हो रहा है? मां कहती है-बेटी! एक तरफ तो बहुत बड़ी पगली लगती हो ओर दूसरी तरफ तो बड़ी चालाक और सयानी दिखती है। तुम्हें नहीं मालूम कि यह बाजा तुम्हारे पिता के घर में बज रहा है और तुम्हारा ही विवाह होने जा रहा है।

लड़की को अपने विवाह की भी खबर न होना उसकी अबोधता एवं लड़कपन का बोध कराता है।

'सोवत रहलेउं मैयया जी के कोरवा,

निंदिया उचटि गयी मोरा
केकरे दुआरे मैयया बाजन बाजइ, केकर होत विआह।
तू बेटी आउर तू बेटी बाउर तू बेटी चतुर सयान।
तोहरे बपइया घर बाजन बाजइ, तोहरइ तोत वियाह।'

एक प्रसिद्ध विवाह गीत में लड़की सोनार से कहती है कि सारे अंगों के लिए गहने, हाथ के लिए कंगन तथा सोलह श्रृंगार वाले आभूषणों को गढ़कर तैयार करो। हमारी बेटी के योग्य मांग टीका बनाओ जिसे पहन कर वह अपने पति के घर जा सके। सारे आभूषण बनकर आ जाते है। सोना चांदी की भरमान होने पर भी बेटी का मुंह झुका तथा मलिन देखकर मां आशंका से पूछती है कि बेटी! किस चीज की कमी हो गयी जो इस प्रकार निराश हो? बेटी कहती है कि मां! मुझे चांदी की कमी हुई है न सोना की, न दहेज की। हमारे और पति के रूप-रंग का अंतर माथा झुकाने को बाध्य कर रहा है। मेरा गोरापन तथा पति का सांवलापन सबसे बड़ा बाधक है। बेमेल विवाह तथा लड़की की असहपति का व्यक्त करना प्रस्तुत विवाह गीत अपने समय का विद्रोह छिपाये हुए है*'गढ़ सोनरा अंगन, गढ़ सोनरा कंगन, गढ़ सोनरा सोरहौ सिंगार।*
बेटा के जोग गढ़उ माथे के ओकंवा पहिरि सजन घर जाई।
की मोरी बेटी हो सोनवा कम भये कि रूपवन भये थोर।
की मोरी बेटी हो दायज कम भये बइठ काहे माथ झुकाय।
नाही मोरी माया हो सोनवा कम नहीं रूपया भये थोर।
हम प्रभु गोरी हो ओइ प्रभु सांवर ओहि गुन मथवा ओनाई।'

सप्तपदी (भांवर) के बाद भाई को हार चुका है लेकिन बहन भाई की हार को हार नहीं मानतीं। भाई-बहन का यह कैसा अटूट एवं मधुर रिश्ता है? आज तक ऐसा देखा गया है कि पत्नी पति की पराजय तो देख सकती। पानी की धार न तोड़ने की चेतावनी बहन की अपनी गरिमा से बढ़कर भाई की गरिमा की प्रतिस्थापना है। भाई के दांव पर अपने आप को हारना उसे कबूल नहीं।

बहन भाई से कहती है भइया! धीरे-धीरे पानी गिराना जिससे धार टॅट न सके। अगर असावधानी से पानी करी धार टूट गयी जो अपनी प्यारी बहन को हार जाओगे? क्या कोई भाई आसानी से अपनी बहन हारता है? .....

प्रस्तुत विवाह गीत में छिपा हुआ प्रतिष्ठा का प्रश्न, पीड़ा की संवेदना हर भावुक मन का झकझोर कर रख देता है।

भइया ! धीरे-धीरे पनिया गिरावउ धार जिनि टूटइ हो!
भइया! पनिया के धार जिनि टूटइ बहिनि हारि जइबअ हो।'

इस प्रकार हम देखते है कि विवाह गीत मात्र संस्कार गीत ही न होकर हमारे जय-पराजय एवं आस्था-विश्वास के भी साक्षी रहे हैं। इन गीतों में पीड़ा की सिसक भी है और उल्लास का आहलाद भी है। आंसुओं की अजस्त्र धारा भी है और फूलों से झरते मुस्कान भी हैं। विवाह गीत करूणा के सागर हैं, भावना के हाहाकार है, जिसे सुनकर संवेदनशील प्राणी रोने और छटपटाने लगता है

स्नेह व्यंजन

राजस्थानी व्यंजन

गूगरी

सामग्रीः गेहूँ, शक्कर, घी, बादाम, इलायची

बनाने की विधिः गेहूँ को अच्छी तरह से साफ करके दो घंटे पानी में भिगोकर रखें. जब गेहूँ भीग जाये तब उसे पानी से बाहर निकाले तथा दूसरा पानी डालकर गेहूँ को चावल के जैसे पकायें. जब गेहूँ पक जाये तब अगर उसमें ज्यादा पानी हैं तो उसे बाहर निकालें.

अब एक कढाही में थोड़ा घी डालकर गरम करें, जब घी गरम हो जाये तब उसमें एक चम्मच पानी डाले, फिर उसमें शक्कर डालकर हिलायें. अब इलायची को बारीक पीसकर व बादाम को बारीक-बारीक काट कर डालें और सभी को अच्छी तरह से मिलाकर कढाही को नीचे उतारें. इस तरह गूगरी तैयार हैं. गूगरी को गरम-गरम ही खाये तो अधिक स्वादिष्ट लगती हैं.

कोयला बाटया

सामग्रीः गेहूँ का आटा, नमक, लाल मिर्च पावडर, जीरा, घी, तेल

बनाने की विधिः गेहूँ के आटे में थोड़ा नमक व तेल डालकर आटा थोड़ा सख्त लगा लें.आटा लगाने के बाद उसके गोले बना लें. अब एक कोयले की अंगीठी ले और उसमें कोयले डालकर जला लें. जब कोयले जलने लगे तब तैयार किये हुए गोलो को थोड़ा बेलकर उसमें घी लगाये फिर उस पर थोड़ा नमक, मिर्च व जीरा डालकर फैलाये और उसे तिकोने आकार में मोड कर फिर से बेलें. बहुत ज्यादा बड़ा नहीं बनाना हैं. जब बेल ले तब जलते हुए कोयले पर बिना कुछ रखे ऐसे ही बाट्या को डालें. कुछ देर बाद पलटियें. जब अच्छी तरह से सिंक जाये तब चिमटे से नीचे उतारे और उस पर घी लगायें. कोयला बाट्या तैयार, इसे दही में थोड़ा नमक मिर्च व भुना व पीसा जीरा डालकर व आचार या मसाले के नीबू या किसी भी रसदार सब्जी के साथ खाकर कोयला बाट्या का लुफ्त उठाये

श्वेता मंगल, एन.ए.२/१०२ए
अजमेरा, पिपरी, पुणे-१८

आप भी भेज सकती हैं. किसी व्यंजन के बारे में जानकारी. व्यंजन संबंधी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए हमें लिखें.

सुनामी का कहर

सैलानी द्विपों पर मौत का समुदर
सुनामी लहरों का खैाफनाक मंजर
लहर-लहर तीर बनी गोला बारूद बनी
जैविक हथियार बनी परमाणु बम बनी
गूँज रही आहत सिसकियों का क्रंदन
पल भर में बिछड़ गये शाखों से फूल
तड़प-तड़प ढूंढ रहे अपनों के मूल
कहर बरसा गया निर्मम बवंडर
ट्रेन, ट्रक, कार, प्लेन, कागज की नाव हुए
विल्डिग मकान, क्षत द्विप बस्ती गांव हुए
घोप दिया लहरों ने युग-युग तक खंजर
नाम, प्राण, काम धाम की खतम कहानी
प्राण-प्राण पी गया पयोधि का पानी
पात-पात आतंकित पुष्प कली गर्दन
मछुआरें मछली के प्राणों को ढगते थे
जालों से जीवन को चुन-चुन कर हंसते थें
लूट लिया लहरों ने सबका मधुआरपन
भय भी भयाक्रांत मृत्यु भी डर गई
दहशत ही दहशत फिजाओं में भर गई
लाशो से भर उठा है। कूलों का अंचल
जिसने भरा था अब कर दिया हैं खाली
सुख की परिकल्पना अब दे रही है गाली
मार रही जीवन को पुनः जल की तड़पनप
क्या खोया क्या पाया हतप्रभ हो पूछ रहें
प्रलयी पयोधर में झूण्ड झूण्ड डूब रहें
तरंगों के तांडव का अति भीषण दश्नन
गरज रहा सागर, सुलग रही चिताप
जीवन के घाव अब किसको दिखायें
लूट लिया अपनों ने क्षण में ही अपनापनप
सुनामी लहरों का खैाफनाक मंजर

डॉ. कुसुमलता मिश्रा 'सरल'

स्नेह-प्यार से रहें यहाँ सब

गॉव बनें सब कुन्दन कुन्दन
मुस्काता हो दर्पन दर्पन
स्नेह-प्यार अति आवश्यक है
जाग्रत करियें यौवन यौवनव
पर्यावरण लक्ष हों सबका
वृक्ष लगायें ऑगन ऑगन
भारत प्यार देश हमारा
उन्नत करियें जीवन जीवन
राजघाट भी हरिद्वार भी
तीरथ समझों पावन पावन
स्नेह-प्यार से रहें यहॉ सब
मानवता का गाएं गायन

श्याम झॅवर 'श्याम'
५८१, विकास नगर, नीमच, म.प्र.

जज्बात

तुम कहो तो ज़ब्त कर लें
ऑसुओं को दिल में हम
ये महज़ ज़ज़्बात दिल है
दर्दे हयात तो नहीं!
शंकित से नयनों से मिलकर
अधरों ने सीखी खामोशी
जितना भी भुलाना चाहा है
उतनी ही बढ़ी है मदहोशी।
देना तो लगा आसान बहुत
पाने में मिली है तन्हाई
जितना भी उतारो कर्ज यहॉ
उतनी ही मिलेगी रूसवाई।

अर्चना श्रीवास्तव, इलाहाबाद

गज़ल

इश्क़ का दुश्मन ज़माना है तो है
हुश्न का अपना फ़साना है तो हैं
इश्क के आगोश में मिलता सुकूं
हुश्न का अपना ठिकाना है तो है
जिंदगी भी एक हसीन ख्वाब है
मौत से मुँह क्या छिपाना, है तो है
है अज़ल से इश्क की आदत हमे
शौक उनका दिल दुखाना है तो है
वे मुरब्बत, वे अदब औ बेवफ़ा
'खाकी को क्या आजमाना है तो हैं

डॉ. ओकार माधव 'खाकी'
चित्रकला विभाग,धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

मन से मन की बात

तुम्हारी चिट्ठी के शब्द
मेरे ऑसुओं से धुल गये हैं
सोचती हूँ क्या लिखा होगा
बहुत कोशिश करने पर भी
तुम्हारे अर्थो तक पहुंच नहीं पाती
मन की बात ही शब्दों के माध्यम से
लेखनी का सहारा लेकर
तुम तक मुझसे
और मुझ तक तुमसे पहुँचती थी।
अतीत के बिछौने पर इन धुधलें शब्दों को
कुछ अपने अक्षरों से भर रही हूँ
ये चिट्ठी बिखरे हुए शब्द
बिन पढ़े भी कोरा कागज नहीं लगते मुझको
न जाने कितनी बार
बन्द ऑखों से मेरे मन ने पढ़ा है इनको
सोंचती हूँ क्यों डूब गये थें
ऑसुओं में तुम्हारे ये शब्द
इनका धुधलापन अब मुझे महसूस नहीं होता
मन से मन को लिखी
इस चिट्ठी में शायद शब्दों का मोल नहीं था।
ऑखों से की बात से अलग
मन से मन को पढ़ना कितना अच्छा लगता है।
अतीत से वर्तमान तक का लम्बा सफर
ऑसुओं से धुली ये चिट्ठी
धुंधले शब्द और कागज
पहुँचा गये मुझकों तुम तक शायद
सोचती हूँ
कल ऐसी ही मेरी कोई चिट्ठी तुम तक पहुँचेगी शायद।

दिवाकर गोयल
उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)
भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, कोलकाता

स्नेह हंसगुल्ले

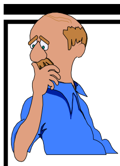

राजरानी चाय

जरा हंस दो मेरे भाय

☠एक पति पत्नी आपस में काफी देर से झगड रहे थे। तो एक पडोसी ने आखिर में पूछ ही लिया–भाई राकेश, आखिर झगडा किस बात पर हो रहा है?
पति ने पत्नी की ओर इशारा करते हुए कहा कि मुझसे क्या पूछते हो? इन्हीं से पूछ लो।
पत्नी पूरी तरह झल्लाते हुए बोली–तीन घंटे से भी ज्यादा हो गये।अब तक क्या मुझे याद रहेगा कि झगडा किस बात पर हो रहा है।

☠ एक मेहमान ने खाना खाते समय मेजबान से पूछा–क्या कारण है कि जब भी मैं खाना खाता हूँ तो आपका कुत्ता भौंकता है।
मेजबान–कुत्ता अपनी प्लेट पहचानता है, इसलिए वह भौंकता है।

☠ एक अध्यापक ने छात्रों से कहा–सिद्ध करो कि तलवार से ज्यादा ताकतवर कलम होती है।
एक छात्र– कलम ज्यादा ताकतवर होती है।क्योंकि कलम से चेक पर साइन किया जा सकता है, पर तलवार से नहीं।

☠एक नेता जी से उनकी पत्नी ने पूछा– आप राजनीतिज्ञ लोग पेड लगाने पर इतना जोर क्यों देते हो?
नेताजी–क्योंकि जिस कुर्सी को पाने के लिए हम एडी–चोटी का जोर लगाते हैं वह भी तो पेड की लकडी से बनी होती है।

☠एक भिखारी से दूसरे भिखारी ने पूछा– अरे मंगतू, तू तो रोज दादर पुल पर भीख मॉगा करता था, आज यहॉ कैसे?
पहला भिखारी– दादर पुल वाली जगह मैने अपने दामाद को दहेज में दे दी है।

☠एक साहब–नवाब साहब आपके ही वालिद बहुत ही भले इंसान थे। उनके इंतेकाल पर हमें बेहद अफसोस है। नवाब साहब एक बात तो बताईये जनाजे में शरीक सभी लोग रो रहें हैं। लेकिन आप के ऑंख में अब तक कोई ऑंसू नहीं आया। क्या आपको अपने वालिद की मौत की मौत का कोई गम नहीं?
नवाब साहब– अफसोस तो है, लेकिन रो नहीं सकता।
साहब चौककर क्यों?
नवाब साहब– अगर मै रोया तो मेरे ऑंसू कौन पोंछेगा।
आज कम्बख्त सुलेमान भी नही आया

☠दीपू (पापा से) पापा आप यह स्कूटर क्यों साफ कर रहें है?
पापा–बेटा सफाई करने से स्कूटर अच्छा लगेगा और सफाई ईश्वर का दूसरा नाम है।
दीपू–पर पापा मैने आपका रखा हुआ सारा चमचम साफ कर दिया तो मम्मी ने मुझे बहुत मारा।

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त पाइए.

पति बदल दिया

एक दल बदलु सांसद की पत्नि ने कहा-प्राण
नाथ अब मुझसे नही सहा जाता
यह युग परिवर्तनशील हैं,
फिर मेरे काम में क्या ढील हैं?
मैनें भी खोजा हैं एक उपाय,
मुझे नहीं चाहिए किसी की राय,
मेरी जिन्दगी का सातवां बेड़ा
मझधार में संभल गया हैं
मैने दल नहीं बदला दिल बदल दिया है
पिता नहीं बदला पति बदल दिया है

विजय कोठारी,
आजाद चौक, नागदा, धार, म.प्र

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः**राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,**
निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

स्वास्थ्य

✍ श्रीमती मोना द्विवेदी,

गर्भनिरोध के कुछ उपाय

गतांक से आगे......

☞डॉक्टरी परामर्श से ही गर्भधारण करें और नियमित जांच करवाएं.

☞यदि किन्हीं दोषों के लक्षण माता-पिता में दिखायी ना भी दें, मगर दोनों परिवारों में रक्त संबंधी कोई बीमारी है, तो भी इसके विषय में डॉक्टर को अवश्य बताएं.

☞गर्भाधान से पूर्व माता-पिता दोनों अपने आवश्यक टेस्ट अवश्य करवाएं.

☞यदि इलाजा के बाद गर्भधारण करने व शिशु के जन्म में समस्या आने की आंशका कम होती है, तो पहले अपना इलाज करवाएं.

☞कुछ अति विशिष्ट परिस्थितियों में डॉक्टर मां ना बनने की भी सलाह देते हैं.

☞ऐसी स्थिति में अंधविश्वासों में ना पड़ कर डॉक्टरी सलाह का अनुकरण करें.

☞बच्चे को गोद ले लेना इसका सबसे अच्छा विकल्प होगा.

☞कभी-कभी गर्भावस्था के किसी चरण में बच्वें के दोषयुक्त होने, मानसिक-शारीरिक विकास कम होने का पता चलने पर डॉक्टर इमजेंसी गर्भपात की सलाह देते हैं, जो आपके व बच्चे दोनों के लिए उचित हैं.

☞इन परिस्थितियों में धीरज रखें. दोषयुक्त बीमार बच्चे को जन्मदे कर आप व शिशु दोनों ही सुखी नहीं रह सकेगें.

☞स्वस्थ शिशु व अपने परिवार के सुख के लिए सभी आवश्यक उपायों को अपनाएं.

☞दोनों में से यदि कोई एक आनुवंशिक रोग से पीड़ित है अथवा परिवार में कोई व्यक्ति इससे पीड़ित है तो डॉक्टर को अवश्य बताएं तथा परामर्श के अनुसार विशेष जांच करवाएं.

☞यदि आप किसी तरह की एलर्जी से पीड़ित हों, तो डॉक्टर को इसके बारे में बताएं तथा इलाज कराएँ.

☞समय-समय पर अपनी डॉक्टरी जांच अवश्य करवाती रहें.

☞यदि आप दवाइंया स्वयं ही खाते रहने की आदी है, तो यह तुरंत बदं कर दें. केवल डॉक्टरी परामर्श के अनुसार ही कोई दवा लें. गर्भावस्था के दौरान बिना डॉक्टरी सलाह के सिरदर्द या बुखार की दवा भी नहीं खानी चाहिए. अनेक दवाओं का गर्भस्थ शिशु पर बुरा प्रभाव पड़ता हैं.

☞नियत समय पर अल्ट्रा साउंड करवाएं, जिससे आंतरिक अंगों व शिशु की स्थिति का ठीक-ठीक पता लग सके.

☞यदि आप पहले कभी किसी रोग से पीड़ित रही हो, तो डॉक्टर को इसके बारे में अवश्य बताएं.

☞हृदय रोग या उच्च्व रक्त चाप की बीमारी से पीड़ित महिलाएं यदि गर्भधारण करना चाहें, तो गहन चिकित्सकीय परामर्श के पश्चात ही गर्भधारण करें तथा लगातारा डॉक्टर की सलाह लेती रहें.

☞गर्भावस्था के दौरान दांतो की सफाई का खास ध्यान रखें. जरूरत पड़ने पर दॉतों की जांच करवाएं.

☞गर्भावस्था के दौरान स्तनों व निपल के आकार में परिवर्तन आता है. इस दौरान निपल की सफाई का विशेष ध्यान रखें.

☞ यदि निपल अंदर की ओर मुड़े हो, तो डॉक्टर के निर्देशानुसार इन्हें हल्के हाथ से बाहर की ओर निकालें.

☞गर्भावस्था के दौरान कहीं आने-जाने से पहले डॉक्टरी सलाह लें. यात्रा के दौरान पर्याप्त सावधानी बरतें.

☞यदि आपकी आयु तीस वर्ष से अधिक है और आप प्रथम बार गर्भधारण करना चाहती हैं तो आवश्यक है कि आप अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें.

☞ अधिक आयु में गर्भाधान जटिल हो सकता है, इसलिए पहले से ही आवश्यक जॉच करा लें.

☞यदि आपका मासिक धर्म नियमित है और किसी बार नियत समय पर नहीं आता तो डॉक्टर को दिखाएं.

☞माहवारी ना आने के साथ अगर जी मिचलाने, भूख कम लगने और चक्कर उल्टियां आने के साथ ही हल्का सा बुखार भी लगे, तो संभव है कि अपको गर्भ ठहर गया हो.

स्वास्थ्य समस्याएं

डॉ. श्रीमती पी. दूबे

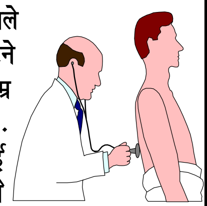

प्रश्नः मेरे आगे वाले दांतो के मसूढें हटने लगे हैं. मेरी उम्र केवल १८ वर्ष हैं. पिछले साल कई दिनों तक चले जुकाम की वजह से मेरे दांत ढीले पड़ गए थे. दांतो व मसूढ़ों की मजबूती व सुरक्षा के लिए कोई कारगर उपाय बताएं. नाहिद अख्तर, मुरादाबाद

उत्तरः मसूढ़े हटने से दांत कमजोर हो जाते हैं और उनकी जड़ें दिखाई देने लगती है इससे दांतों में इंफेक्शन की संभावना बढ़ जाती हैं. अगर दांत सांप नहीं है, उनके नीचे क्रेस्ट का जमाव है, तो उनकी सफाई करा लें एवं सही तरीके से ब्रश करें. इसके लिए नजदीक के किसी दंत रोग विशेषज्ञ से मिल लें.

प्रश्नः मुझे करीब चार सालों से कब्ज और सिरदर्द की शिकायत हैं. साथ ही मेरी बांहो, पलकों और मूंछों में रूसी होने के कारण बाल तीव्र गति से गिर रहे हैं. कोई इलाज बताएं. संतोष कुमार दुबे, गाजीपुर

उत्तरः कब्ज एक आम बीमारी हैं. यह पेट एवं अन्य बीमारियों से जुड़ी हो सकती हैं. समय पर एवं रेशेदार भोजन न करने, पानी कम पीने एवं व्यायाम न करने से भी कब्ज बना रह सकता हैं. इससे अन्य तरह की बीमारियां हो सकती हैं, जैसे सिर में दर्द, सीने में भारीपन आदि. जहां तक रूसी एवं बालों के गिरने की बात है, तो यंह सतुलित भोजन न लेने से हो सकता हैं. आप रूसी वाली जगह पर नारियल का तेल लगाएं, तथा पौष्टिक भोजन, अंकुरित दालनों एवं मुंगफली का सेवन करें. आपकी समस्या काफी हद तक हल हो जाएगी.

मंच पर्दे कुछ नही थे, फिर भी ये ड्रामा हुआ।
मैंने ऐसा क्या कहा, जो इतना हंगामा हुआ।।
उम्र भर हालात से दो हाथ हम करते रहे,
इक कफन की आड़ में,
इनका सुलहनामा हुआ।।

दिनेश रस्तोगी

स्नेह लघु कथाएं

खाना

वीरन मेरा सहपाठी हैं. कुछ दिन पहले मैं शिमला जा रही थी कि रास्तें में बस रूकी व यात्री खाना खाने के लिए उतरे. मैंने भी चाय मंगाई. होटल पर वीरन को देखकर हैरानी से पूछा, “तुम कहॉ?” “ये मेरा ही होटल हैं तू कहॉ?” बड़े प्यार से उसने मुझे बिठाया. चाय के साथ नाश्ता भी दिया कि बीच में उसका बेटा स्कूटरपर टिफिन लिये आ गया. उसने परिचय कराया व टिफिन एक तरफ रख दिया. मैंने पूछा, “वीरन, इतना बड़ा होटल, इतनी सब्जियां, फिर तुम्हारा खाना घर से.” वीरन के उत्तर देनेसे पहले ही उसका बेटा नासमझी व स्पष्टता में बोला, “ऑटी, घर का खाना तो घर का हैं, फिर यहां इतनी सफाई कहॉ?” वीरन हॅसा परन्तु मैं सकते में आ गई, ये सोच कि अगर मालिक को अपना खाना गले नहीं उतरता तो उसमें कितनी गुणवत्ता हमारे लिए छिपी हैं.

फैसला

पति के मरते ही हीरादेई की दशा दयनीय हो गई थी. वह उदास, कटी-कटी रहने लगी. दोनों बहू-बेटे उससे कटने लगें. कोई बहू बच्चा पकड़ाकर घूमने निकल जाती, तो कोई ढेर सब्जी सलाद काटने को कह देती. समय मिलते ही जली-कटी सुनाने लगती. इस बुढ़िया से कब पीछा छूटेगा? काम की न काज की, सौ मन अनाज की, सुनते-सुनते उसका मन भर उठता. दीवाली पर उसका भाई आया, उसने बहन की दशा देखी, उसे बहुत बुरा लगा. हीरादेई ने बताया कि उसके पति पूरी जायदाद इन दोनों के नाम कर गये हैं, शायद उसकी इस दशा के वो ही जिम्मेदार हैं. भाई ने उसे कचहरी का दरवाजा खटखटाने की सलाह दी व हीरादेई ने प्रार्थना पत्र जज के नाम दे दिया. दोनों लड़कों को उनकी मिली पूंजी से २-२ लाख जज के पास जमा करने का आदेश हहुए. पैसा जमा किया गया व हीरादेई को देते हुए जज ने कहा कि वे अपनी इच्छा से दोंनों में से किसी भी बेटे के पास रह सकती हैं. दोनों बेटों में होड़ सी लग गई,“मॉ मेरे पास रहेगी, मॉ मेरी हैं.” मॉ ने पिछले एक बरस की होती दुर्दशा पर निगाह डाली स्वयं ही वृद्धाश्रम जाने का फैसला किया व अपनी जमा पूंजी से अपने साथियों को सहारा देनी की सोची. मॉ का फैसला सुनते ही दोनों बेटे दॉतों तले अंगुली दबाकर रह गएं.

शबनम शर्मा, २८३३/११, नवाब गली, नाहन, हि.प्र.-१७३००१

PLACE YOUR ORDER NOW
ज्योतिष, वास्तु, वेद, योग
आध्यात्म, स्वास्थ्य की हिन्दी मासिक

सर्व कल्याणी विशुद्ध ज्योतिषिय मासिक पत्रिका
ज्योतिष दृष्टि

मूल्यः ३०रु. अर्द्धवार्षिक : १५०रू. वार्षिक : २७५रू.

पाठक, लेखक, वितरक, एजेंट, विज्ञापनदाता
कृपया संपर्क करें

Publisher & Editor
ए.के. अवस्थी

4/325, Near Kendriyia Vidyalaya-1, ☎0744-2463092, Fax:2463425

ग़ज़ल

जब छू सके न मुझकों सैलाब ज़िदगी के
मुझकों डराएंगे क्या गिर्दाब ज़िन्दगी के
दुनिया हैं आज पागल परछाइयों के पीछें,
पुरदर्द हैं ये मंज़र बेताब ज़िंदगी के।
ताउम्र जिनको पाला नाज़ों से मैंने अब तक,
उड़कर गए कहॉ वे सुर्खाब ज़िदंकी के ।
ऑखों में अश्क दिल में ग़म हैं लबों में आहें,
क्या कम हैं इतने कहिए असबाब जिंदगी के।
अफ़सोस निकले वे तो बस मौत के फ़रिश्ते
समझा किये जिन्हें हम अहबाब ज़िंदगी के।
उसने ही फ़स्लेगुल में लूटा चमन को यारों,
सपने दिखाए जिसने शादाब ज़िदकी के।
इस दौर में जिया हूॅ घुट–घुट के चूॅकि मैंने,
सीखे नये न अब तक आदाब ज़िदंगी के।
माना कि मौत का हैं साया क़दम–क़दम पर,
मेरी ग़जल में लेकिन हैं ख्वाब ज़िदंगी के ।

भगवान दास जैन,
बी–105, मंगलतीर्थ पार्क, नगर रोड, अहमदाबाद,गुजरात

स्नेह ज्योतिष

कैसा रहेगा शनि, साढे साती के दौर में

महाराज परीक्षित के समय से 'कलियुग' पर शनि महाराज का अधिपत्य स्थापित माना जाता हैं, किंतु ज्योतिष की गणना करें, तो शनि के अंधिपत्य की स्थिति साफ हो जाती हैं. किसी भी राशि में इसका संचार हो, यह १२ में से ७ राशियों पर रहता हैं, यानि संसार की कुल जनसंख्या का लगभग ५८ प्रतिशत भाग शनि के शुभाशुभ प्रभाव में रहता ही हैं.

एक अन्य सूत्र के अनुसार बृहस्पति जिस राशि में होता है, उस भाव को बिगाड़ता है और दृष्टि से शुभफल देता हैं. इसके विपरित शनि जिस राशि में आता है, उसे बिगाड़ता नहीं किंतु दृष्टि जहां जहां पड़ती है, वहां खबर पूरी-पूरी लेता हैं. मिथुन जातकों की आखिरी व कर्क जातकों की दूसरे चरण की साढ़ेसाती का क्या फल देगें शनि महाराज!

कर्क राशि जिनकी है, उनके प्रथम भाव में शनि चलेगा. साढ़ेसाती का दूसरा चरण भी आरंभ हो चुका हैं. आपकी राशि से प्रथम भाव होने के नाते, शनि का संचार शुभ नहीं माना जाता. निजी, घरेलू व व्यावसायिक कष्ट प्राप्त होते है, किंतु जैसे इस राशि में शनि को बृहस्पति, स्वयं शनि व बुध के नक्षत्र प्राप्त होने से शुभफल अधिक देगा. शनि आपको छठे, नवम, सप्तम व अष्टम और तृतीय व १२वें भाव से संबंधित नतीजे देगा.

इसकी दृष्टि कर्क जातकों के तृतीय सप्तम व दशम भाव पर पड़ेगी. इस तरह नौ स्थानों पर किंतु असल में सात स्थानों पर इसका प्रभाव रहेगा. यानि प्रथम, तृतीय, छठे, सप्तम, अष्टम, नवम व दशम भाव प्रभावित करेगें शनिदेव.

जब तक शनि कर्क की प्रथम ३.२० डिग्री तक चलेगा, आपको छठे व नवम भाव के नतीजे प्राप्त होगें, यदि आपकी मूलपत्री में बृहस्पति शूभ फलदायी है और शनि अति कमजोर नही हैं. लेकिन सफलता आसानाी से प्राप्त होगी, यह भी नहीं होगा. आपकों अपने प्रारब्ध व क्रियाशीलता, साथी-संगियों से व्यवहार कुशलता व कैरियर/व्यापार के मसलों को गंभीरता से लेना होगा. दृष्टि का अशुभफल देने में शनि सक्रिय रहेगा. बचेंगे वे ही जो अति सतर्क व कर्मठ रहेंगें. संचारगति की सूक्ष्म गणना के अनुसार आपको यह फल कम-ज्यादा में सन् २००५ के अंत तक प्राप्त होते रहेंगें. बस अपनी सेहत का भी ध्यान रखें.कमर, उदर, आंतो, के रोग आपकों तंग कर सकते हैं. विवाहित हैं तो अपने दांपत्य जीवनकी रंगीनियों को जीवंत व सुचारू रखें. संभलकर चलें, शनि की पूजा आदि करते रहें. अपनी विचारशक्ति को विकासप्रिय रखें. आपको सन् २००५ तक शनि शुभफल प्रदान कर सकता हैं.

३.२० से आगामी १० डिग्री तक शनि अपने ही शुभ नक्षत्र, पुष्प में चलेगा. सप्तम भाव पर इसकी पूर्ण दृष्टि पड़ती है और तृतीय भाव पर भी. यदि आप अपनी क्रियाशीलता विवेक प्रारब्ध और सहयोगियों का सकरात्मक उपयोग करते रहेंगें, तो आपकी नैया पार लगती रहेगी. कैरियर/व्यापार आदि में आपकों कठिनाइयों का सामना तो करते ही रहना होगा, पर लगभग १३ माह का शनि का यहां संचार आपको बहुत कुछ दे सकता है. आय में वृद्धि, अपनी स्थाई जमापूंजी आदि में बढ़ोत्तरी करने का प्रयास शुभफल प्रदान करेगा. कार्य बनेंगें अवश्य भले ही आपकी नींद उड़ती रहें.

कर्क राशि में १६.४० डिग्री से आगे शनि आश्लेशा नक्षत्र से गुजरेगा, यह बुध ा का नक्षत्र हैं. इसके गुण व अवगुण से आप अवगंत हो चुके हैं, फिर भी इस नक्षत्र में चलते-चलते आपके प्रारब्ध में कमी नहीं होने वाली. व्यय भार कुछ बढ़ेगा अवश्य, कुछ प्रयास भी विफल हो सकते हैं, विकास की प्रगति धीमी हो सकती हैं, मन में एकाकीपन भी हावी रहेगा, किंतु अपकी भाग्यवृद्धि भी अवश्य होगी. काम-धधें से स्थिति अनुसार स्थाई व ठोस इनकम प्राप्त होती रहेगी. नए मित्र भी बनेगें और घर में सुख -सुविध ााओं की बृद्धि भी होगी. आपकी मूल जन्म पत्री में यदि बुध उच्च राशि में हैं तो कठिनाइंया कम आएगी. फरवरी २००७ तक आप स्वयं को संतुष्ट पाएंगें क्योंकि बृहस्पति संचारगत रहते, शनि के अनिष्ट फलों को पूर्ति करता रहेगा और आपकी सहायता करेगा. इस तरह आपकी साढ़े साती का दूसरा चरण न्यूनाधिक में कारगर ही सिद्ध होगा. शनि इस नक्षत्र में कुछ कष्ट देगा. अतः निदान हेतु उपाय करते रहें. आपकी जीवन नैया गोते नहीं खाएगी.

योग साधना

ऋषि परंपरा से योग साध ाना व वेद -शास्त्र-पुराण आदि के स्वाध्याय के जिज्ञासु पत्र-व्यवहार करें-

महर्षि गिरिधर योगेश्वर
योगधाम, पो. गुलेर, कांगड़ा, हि०प्र. १७६०३३

पुलिस स्टेशन में हुई शादी

वेलिंगटन. वह अपनी होने वाली बीबी को सरप्राइज देना चाहता था. एंटोनियों अपनी मंगेतर जूली से शादी करने वाला था. लेकिन उसने यह तय नहीं किया था कि किस दिन और कैसे शादी करेगा. एक दिन उसे न जाने क्या सूझी और बगैर अपनी मंगेतर से बातचीत किए पुलिस स्टेशन पहुंच गया. उसने वहीं से फोन किया कि वह जल्दी पहुंचे. जूली को लगा कि हो न हो उसने कोई गंभीर अपराध कर दिया है और पुलिस उसे पकड़ कर थाने ले गई हैं.

दरअसल एंटोनियों पुलिस स्टेशन में ही शादी करना चाहता था, इसलिए उसने वहां सारी तैयारी कर रखी थी. जुली जैसे तैसे पुलिस स्टेशन गई थी. इसलिए पहले तो वह शादी के लिए तैयार नहीं हुई. लेकिन यह जानकर कि एंटोनियों शादी को यादगार बनाना चाहता है, उसने अपनी सहमति दे दी. और इसके साथ ही दोनों ने पुलिस स्टेशन में आजीवन साथ रहने की कसमें खाई.

समय से स्कूल पहुंचा तो सस्पेंड हो गया

फ्लोरिडा. समय से स्कूल पहुंचना भी क्या किसी को सस्पेंड करवा सकता हैं. पर यहां ऐसा ही हुआ. टेंपा के उत्तर पूर्व के टेंपिल टेरेस शहर के रिवरहिल्स एलीमेंटीं स्कूल के एक आठ वर्षीय छात्र की स्कूल बस छूट गई तो वह स्वयं कार चलाकर स्कूल पहूच गया. घर स्कूल के ढाई किलोमीटर के हमेशा व्यस्त रहने वाली चार लेन की सड़क उसने कुछ ही मिनटों में तय कर लिया.

पुलिस के अनुसार यह कार चोरी की हैं. स्कूल ने इस छात्र को खुद व दूसरों को जोखिम में डालने के जूर्म में 10 दिन के लिए सस्पेंड कर दिया. हांलाकि पुलिस ने उसे गिरफ्तार नहीं किया. पुलिस का मानना है कि उसे कार चलाते हुए नहीं देखा हैं. जबकि सहपाठी बच्चों का कहना है कि उन्होंने उसे अकेले ही स्कूल के बाहर कार पार्क करते देखा था. जबकि उस बच्चे का कहना है कि उसके अंकल ने पिछले हफ्ते उसे इसी कार में चलाना सिखाया था.

मोटे सिपाहियों को नही मिलेगा बोनस

मियासी. पुलिस के सिपाहियों से हमेशा ही चुस्त–दुरूस्त रहने की उम्मीद की जाती हैं, क्योंकि इन्हें जरूरत से ज्यादा भागदौड़ करना पड़ता हैं. इसके बावजूद बहुत से पुलिस वाले भी बेडौल दिखाई देते हैं. पुलिस विभाग की तमाम ताकीदों को अनदेखा कर ये लापरवाही से मोटे होते रहते हैं. लेकिन अब यहां के पुलिस विभाग ने इनके मोटापें के खिलाफ कड़े कदम उठाने का फैसला किया हैं. तय किया जा रहा हैं कि जो पुलिसकर्मी तय वजन से ज्यादा होगें, उन्हें बोनस नहीं दिया जाएगा. यानी ये इस साल अना 500 पौंड खो बैठेगें. दूसरी ओर पुलिसकर्मी इस आदेश से खफा हैं. उनका कहना है कि इससे विभाग के बहुत से कर्मचारी सिर्फ वजन के कारण ही इतना नुकसान उठाने को विवश हो जाएगें.

आग लगा दी प्रेमिका को रिझाने के लिए

अपनी महबूबा को पाने के लिए फिल्मों में हीरो जो एक्टिंग करते हैं, असलियत में वैसा करने की शायद ही कोई हिम्मत जुटा सके. वैसे प्यार में पागल इनसान कुछ भी कर सकता हैं, लेकिन यह अमेरिकी महाशय अपनी प्रेमिका को पाने के लिए दीवानगी की हद तक

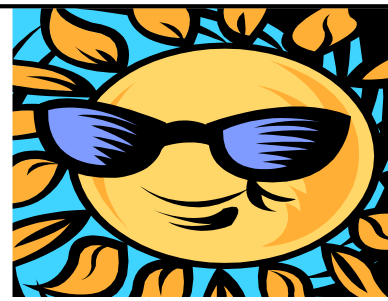

चले गए. उन्हें यह ध्यान हीं नहीं रहा कि महबूबा को आकर्षित करने के चक्कर में वह दूसरों को कितनी हानि पहुंचा देगें.

जॉन टुचेक ने अपनी प्रेमिका को आकर्षित करने के लिए एक चाल सोची. उसने उस घर के बाहर आग लगाकर बुझाने की योजना बनाई, जिसमें उसकी मंगेतर रहती थी. ऐसा करने से 34 साल का यह पुलिस अधिकारी उसकी नजर में हीरो बन जाता, लेकिन इस घटना के बाद वह हीरों तो नहीं, जीरो जरूर बन गया.

जॉन ने घर के बाहर दो बक्सों में आग लगा दी. देखते–देखते चारों तरफ आग फैल गई. इसमें आसपास के दस घर जल कर राख हो गए. दो ऐतिहासिक इमारतों को हानि पहुंची और एक दुकान बुरी तरह जलकर नष्ट हो गई. इससे साढ़े तीन लाख पौंड (तकरीबन तीन करोड़ रुपये) की संपत्ति जल गई.

जॉन आग लगाकर अपनी प्रेमिका को बचाने के लिए दौड़ा, ताकि वह उसकीस नजर में सच्चा प्रेमी, बन जाए, लेकिन उसकी योजना असफलत हो गई. फिलहाल उसे पुलिस विभाग से मुअत्तल कर गिरफ्तार कर लिया गया है.

इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जो आपके संज्ञान में हो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं.. अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे. अच्छी खबरों के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की. कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पत्रा–व्यवाहार के पते पर.

सूखें है बसन्त के प्राण

गीत संग्रह, गीतकारः <u>डॉ. परमलाल गुप्त</u>, पीयूष प्रकाशन, नमस्कार शारदा नगर बस स्टैण्ड के पीछे सतना-४८५००१, म.प्र. मूल्य एक सौ रुपया मात्र. एक सौ बारह पृष्ठीय इस पुस्तक में कुल अठ्ठानवे गीत एवं एक कविता व सरस्वती वन्दना समाहित हैं. यह कवि की छठवीं काव्य कृति हैं जिसमें कई गीतों में कवि स्वयं छन्द बनकर लिपिबद्ध हुआ हैं. गीतों में प्रवाह और गेयता तो है ही साथ ही बोध गम्यता भी हैं. साहित्य की विविध विधाओं में समान अधिकार से लेखन का प्रभाव डॉ. गुप्त की इस पुस्तक में स्पष्ट परिलक्षित होता हैं. मानवीय मूल्यों की स्थापना, सृजनात्मक क्षमता की गहन साधना, अन्तःकरण की सात्विक अनुभूति इस पुस्तक के प्रमुख काव्य तत्व हैं. व्यंग्य भी सीधा और सपाट हैं रचनाधर्मियों और सत्ताधारियों को समान रूप से परिभाषित करके कवि ने अपना कवि धर्म पूरी ईमानदारी से निभाया हैं. कवि की आत्मिक पीड़ा भी कई रचनाओं में साफ झलकती हैं. प्रकृति वर्णन में कवि मन बूँद की तरह निर्लिप्त हो उठता हैं चाहे सीप में गिरे या अंगार पर किन्तु कोई व्यामोह या अवसाद नहीं. जीवन की शाम ऋचा की तरह पवित्र संकल्प युक्त हैं तभी निष्काम भाव से सिर्फ सर्जना को ही प्रार्थना मानकर कवि आत्मविश्वास से परिपूर्ण हैं. समाज के विभिन्न वर्गो पर भी अपनी आत्मिक अभिव्यक्ति परम लाल की हृदयगत विशालता की परिचायक हैं. कवि की विराट लघुसत्ता श्लाघ्य ही नहीं वन्दनीय भी हैं. कालचक्र निश्चित रूप से सशक्त होता है इसीलिए कर्म के साथ साधन को साध्य माना गया हैं. सार्थक रचना के लिए साधुवाद

कूपन सं. 4 जूलाई05

विश्व स्नेह समाज

हूँ भी, नहीं भी

(हाइकू-काव्य संग्रह), **भगवत शरण अग्रवाल**, **प्रकाशन** हाइकू भारती प्रकाशन, ३६६, सरस्वती नगर, आजाद सोसायटी के पास, अहमदाबाद-३८००१५, **मूल्य** - १००रुपया मात्र.

स्वयं कवि के ही शब्दों में "क्षण के जीवन-सत्य को शाश्वत करने की कला ही हाइकू-कला हैं." अर्थात हाइकू शाश्वत जीवन के सत्य का क्षणिक उद्घाटन करता हैं. यह विधा अपने आप में अनूठी हैं पिछले दो दशकों पूर्व यह विदेशी विधा के रूप में हिन्दी जगत में पहचान बनाने के लिए संघर्षरत थी किन्तु अब भगवत की शरण में आ जाने से यह परम तत्व की भॉति हिन्दी जगत में शाश्वत हो गयी हैं. अत्यन्त लघुता में विराटता छिपी हैं वह केवल हाइकू ही परिभाषित कर सकती हैं. इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए कवि ने मानवीय संवेदनाओं को स्वयं जिया हैं. भाव बोध की गंभीरता उत्पन्न करने में सखम हाइकू जनमानस मे धीरे-धीरे आत्मसात होता जा रहा हैं. "नित्य ही सत्य/दृष्टिकोण अनेक/विभक्त अहम्!" तथा "दीप से दीप/अखाण्ड अस्तित्व/शाश्वत साक्षी" जैसी हाइकू रचनाओं मं उत्कृष्ट जीवन दर्शन छिपा है. यह सार्थक प्रस्तुति सचमुच सराहनीय और संग्रहणीय हैं.

समीक्षकः

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय

सम्पादक-साहित्यांजलि प्रभा,गॅधियांव, करछना, इलाहाबाद-उ०प्र.

नोटः पुस्तकों व पत्रिकाओं की समीक्षा के लिए दो प्रतियां भेजें.

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 2)

कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग—अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

सम्पर्क करें या लिखेंः- मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई. जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसीः** ६३३५१५५६४६

विश्व स्नेह समाज कूपन ऑफर

आप प्रत्येक माह पत्रिका में रु ५/- का एक कूपन पायेंगें जिसे आप जमाकर आप अपने संस्थान, फर्म का विज्ञापन अथवा बंधाई संदेश, वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं. इसके लिए आपको उक्त राशि के बराबर का कूपना अथवा राशि जमा करनी होगी.

शर्तेः १.विज्ञापन रु. १५०/का, बधाई संदेश रु० १००/- से कम का नहीं होना चाहिए.

२. एक अंक की अधिकतम ५ कूपन ही स्वीकार्य होगा.

३. किसी भी तरह के विवाद के संदर्भ में पत्रिका प्रबंधन का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा.

स्थापित सन् १९२५

द स्कूल एण्ड होम फॉर द ब्लाइन्ड

(अन्धाखाना), जेल रोड, नैनी, इलाहाबाद

उद्देश्यः

१. नेत्रहीनों को निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा, आवास, प्रशिक्षण, उज्जवल भविष्य की सुविधा प्रदान करना

२. गरीब नेत्रहीनों के लिए रोजगार स्थापित करवाना एवं रोजगार हेतु प्रशिक्षण एवं धन मुहैया करवाना

३. विकलांगो के हितो को ऊपर उठाना

अपीलः

समाज के लोगों से हमारी अपील हैं कि यदि आपके आस-पास अथवा जानकारी में नेत्रहीन हों तो, उन्हें हमारे संस्थान तक पहुँचाने का कष्ट करें अथवा हमारे संस्थान को पता सहित लिखें-

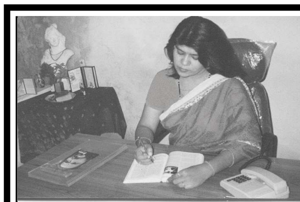

महासचिव
श्रीमती एस० एलिजाबेथ

जनसंपर्क विभाग
अन्ध विद्यालय एवं शरणालय (अन्धाखाना)
८/८, अभयचन्द्रपुर, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद

लगन हो तो लगन में आईये

रिश्ते मजबूत बनाना हो, दुल्हें का सजाना हो या फिर बच्चों को बहलाना हो सभी के स्वागत के लिए हर समय तैयार है। आपका अपना विशाल शो रुम लगन कलेक्शन गंगा-यमुना तहजीब के लिए भारत में अपना जारू मुकाम रखने वाले शहर इलाहाबाद का नाम बुलंदियों पर पहुंचाने वाले लगन कलेक्शन शो रूम का विशाल संग्रह इन दिनों नगरवासियों के लिए प्रेम का प्रतीक बन गया है।

ग्राहकों की आकांक्षाओं पर दा ही खरा उतरने वाला यह शो रूम सभी वर्गो के लोगों की पहली पसंद बन गया है। यहां रेमण्ड, रीड एण्ड टेलर ग्रेसिम विमल एवं कॉटन का पूरा स्टाक मौजूद हैं, मंहगाई के लिए बदनाम सिविल लाईन्स का मिथक तोड़ता लगन कलेक्शन कम दाम में बेहतरीन क्वालिटी के कपड़ें परोस कर शहर वासियों को राहत पहुँचा रहा हैं, लगन कलेक्शन मीना बाजार के ठीक सामने सेल्स टेक्स ऑफिस के नीचे सिविल लाईन्स में स्थित है।